



ज़ज्ज्वातीं का घर

कोरोना से लड़ने का ज़ज्ज्वा - विकास बंसल द्वारा



विकास बंसल

(सह-संस्थापक: प्रकृति-ई-मोबिलिटी)



विकास बंसल का जन्म बिजौर में हुआ था और उन्होंने जीआईसी से अपना +2 पूरा किया। उनका स्वयं का सामाज्य बनाने का सपना था तथा वह व्यवसाय के शुण सीखने के लिए निकल पड़े। उनका पहला पड़ाव मैकेनिकल इंजीनियरिंग था जहाँ उन्होंने इस विषय पर गहराई से विचार किया तथा दूसरी तरफ यू.पी. आर्टिकल लिए। मैं हार्डकोर प्रोडक्शन कर्मी के रूप में सामने आए। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने सपनों के रास्ते में अपने मेहनती स्वभाव को कभी छोड़ नहीं दिया।

कम उम्र से ही अमिताभ बच्चन के प्रशंसक होने के कारण, वह जल्द ही उ.बी.ई.एफ. टीम के उक शर्वित सदस्य तथा सह-संस्थापक बन गए। तब से विकास ने अपने हीरो से मिलने के लिए उक लम्बा सफर तय किया।

वर्ष 1996 से अपने सपनों का पीछा करते हुए, विकास ने अपने हीरो की उक झलक पाने के लिए आरंभिक 22 वर्ष बिताए। बहुत कम लोगों को पता था कि उनके जीवन में ऐसा मोड़ आया जब श्री बच्चन उन्हे स्वयं बुलाएँ तथा विभिन्न सांस्कृतिक मंच पर उनके द्वारा लिखी गई विभिन्न कविताओं को पढ़ने के लिए बद्धाई दें।

अपनी स्वयं की विरासत बनाने के साथ-साथ विकास बंसल ने यू.पी. आर्टिकल लिए। मैकेनिकल इंजीनियर हैंडलिंग प्रोडक्शन के रूप में कदम बढ़ाए। यह वर्ष 1998 था जब उन्होंने मार्केटिंग में कदम रखा तथा अपने 'आइडिया' के लिए उक व्यवसाय योजना का निर्माण आरम्भ किया। किसे अंदराजा था कि यह करियर विकल्प उन्हें अपने आवी व्यवसायिक साझेदार के करीब बनाने वाला है, जो उनके सबसे अच्छे दोस्त भी होंगे।

2020 तक विकास बंसल ने अपने नाम के साथ निम्नलिखित क्रेडिंशियल का दावा किया है:-

सह-संस्थापक:- प्रकृति-ई-मोबिलिटी

उक ई-मोबिलिटी कम्पनी जो जनता को पर्यावरण में योगदान करने का उक साधन देने में मदद करती है।

प्रबंध संचालक - व्योम पांवर प्राइवेट लिमिटेड

(5 मेगावॉट और 10 मेगावॉट की स्थापित क्षमता वाली उक कम्पनी और जल्द ही 10 मेगावॉट से आगे बढ़ने की उम्मीद है।)

प्रबंध संचालक - मिनसोर्स इंटरनेशनल

प्रबंध संचालक - बी. उस. स्प्रिंग-ओ-टेक

उनकी नवीनतम परियोजना द्वारा पहली पेशकश प्रकृति ई-मोबिलिटी उवरा कैब्स है। उक तेजी से बढ़ती हुई ऐप आधारित टैक्सी सर्विस जिसे उपभोक्ता को भारत में निःशुल्क यात्रा करने का साधन बनाया गया है व सभी इलैक्ट्रिक कैब का सबसे बड़ा बेड़ा है।





A m i t a b h B a c h c h a n

January 16, 2021

951 10571

Thank you for your warm wishes for the New Year and for the thoughtful gifts and diaries you sent alongwith. It was very kind and gracious of you.

I must congratulate you for the app based electric cab service brand "Evera" with its intent to serve the community under the Jeevan Seva app. Your initiative for free and safe transportation for Covid affected patients in home isolation, for their travel to and from hospital under the Delhi government, taking all precautionary measure to ensure safety and comfort at the same time, is truly commendable.

Our prayers and best wishes for every success and progress in Prakriti's endeavours for a clean and green environment through sustainable mobility. God bless you and your efforts.

With best wishes,

Amitabh Bachchan

AMITABH BACHCHAN

Mr Vikas Bansal
Co-founder
Prakriti E0mobility & MD, Vyam Power
723, 7th floor, DLF Tower B
Jasola District Center
New Delhi - 110 025

AMB:pd:jalsa

Janak B/2 V L Mehta Road Juhu Mumbai 400 049
(Res) 91-22-2613 1007 (Off) 91-22-2611 4016 abel@bom3.vsnl.net.in

न दिन पता चल रहा है, न रात
न Sunday, Monday
न मार्च, अप्रैल
इन सब से अब मैं ऊपर उठ गया हूँ
बहुत दिनों बाद, मैं अपने घर में खो गया हूँ
बचा रहा खुद को तो सब बच जाएँ
लड़ा रहा हर तरकीब, कर रहा हर उपाय
न मैं, न तू बस हम ही हम
निकलूँगा न बाहर है क़सम
क्या से क्या हो गया हूँ
बहुत दिनों बाद, मैं अपने घर में खो गया हूँ
मरने की फुर्सत नहीं थी कभी
आज बस जीने की क़वायदें
रुठ गया था जाने कौन कौन
सोचता हूँ मिटा दूँ सब शिकायतें
ढूँढते हैं सब मैं पलंग के नीचे सो गया हूँ
बहुत दिनों बाद, मैं अपने घर में खो गया हूँ
घर मेरे पास था पर मैं नहीं था घर के पास
क्या होता है घर, घर करा रहा अहसास
ये घर ही है मेरी हिम्मत, हौसला, विश्वास
मुझे दे रहा पनाह और जीने की आस
यादों में बचपन की मैं खो गया हूँ
बहुत दिनों बाद, मैं अपने घर में खो गया हूँ



खामोश हैं गली शहर, सुनसान रातें
मेरा घर कर रहा, मुझसे हजार बातें
मिलना नहीं किसी से तो न मिलेंगे
मेरा घर कर रहा, मुझसे शानदार बातें
ज़िन्दगी के मायने समझा दिए वक्त ने
मेरा घर कर रहा, मुझसे वज़नदार बातें
मझे वक्त नहीं है कि अकेला हो जाऊँ
मेरा घर कर रहा, मुझसे लगातार बातें
रुक नहीं रही हँसी, आँखों से आसूँ
मेरा घर कर रहा, मुझसे मज़ेदार बातें
मेरा पूरा ख्याल रख रहा है मेरा घर
मेरा घर कर रहा, मुझसे यादगार बातें



बहुत दिनों बाद आज बारिशों का मौसम है
हम क्या करें ये तो गुज़ारिशों का मौसम है
काग़ज़ ढूँढ़ा कश्ती बनाई पानी में चलाई
मिल जाये पकौड़ी ये ख्वाहिशों का मौसम है
कपड़े उतार छत पर चढ़े, नहाये देर तक आज
मना करते नहीं बना, ये सिफ़ारिशों का मौसम है
मन करता है कि किसी को आज बुला लें पर नहीं
दूरी रखनी है उनसे, ये आजमाईशों का मौसम है
हम किसी से छपा नहीं पाये, बचपना हमारा आज
हम क्या करें ये बचपने, नुमाइशों का मौसम है
कोई ले रहा इम्तिहान, तो हम देंगे और जीत जाएँगे
हमारे सब्र की लकीरों और पैमाइशों का मौसम है



दिखा दो दुश्मन को तुम तैयारियाँ अपनी
घर में रहकर निभाओँ ज़िम्मेदारियाँ अपनी
बास्त्व बिछा है बाहर मत निकलो तुम अब
कुछ तो दबा कर रखो तुम चिंगारियाँ अपनी
ये मूल्क तुम्हारा है और तम ही हो फलवारी
समय मिला तो संवार लो तुम क्यारियाँ अपनी
बात दो चार दिन की होती तो हम बचा लेते
दिखा दो आज सबको तुम खुद्दारियाँ अपनी
बहुत कुछ है जिसे तुमने पढ़ा नहीं, देखा नहीं
आज समय है खंगालो तुम अलमारियाँ अपनी
ये छत, ये दीवार, ये धरती तुम्हारी है अपनी
सुन सको तो सुन लो तुम किलकारियाँ अपनी
दिखा दो दुश्मन को तुम तैयारियाँ अपनी
घर में रहकर निभाओँ ज़िम्मेदारियाँ अपनी
बास्त्व बिछा है बाहर मत निकलो तुम अब
कुछ तो दबा कर रखो तुम चिंगारियाँ अपनी



वक्त का साज़ है बात मेरी
खास अन्दाज़ है बात मेरी

आने वाला है दुश्मन कल तो
उसका आग़ाज़ है बात मेरी

कहने से मेरे रहे ठिकाने पर
क्राबिले-नाज़ है बात मेरी

सबकी वो ही एक कहानी
सबकी हमराज़ है बात मेरी

करते हैं परवाह तो बोलते
दिल की आवाज़ है बात मेरी

सबका तरीका अलग अलग
ग़ज़ब अंदाज़ है बात मेरी

देखती धरती, आसमा देखेगा
ऐसी ही परवाज़ है बात मेरी

रहना दूर दूर तुम सबसे अब
दवा और इलाज़ है बात मेरी

वक्त की साज़ है बात मेरी
खास अंदाज़ है बात मेरी

आने वाला है दुश्मन कल
उसका आग़ाज़ है बात मेरी



आ गया फिर दादी, नानी के किस्से सुनने सनाने का मौसम
परिवार के साथ अपने अपने घर में समय बिताने का मौसम
लड़ने को दुश्मन से रहना है घर में पैरों पर लगा के लगाम
हिम्मत अब न हारने का, हौसलों से उड़ते जाने का मौसम
बंद करने हैं सब कच्चे कान, अफ़वाहों पर नहीं देना ध्यान
सच का पता लगाने, अफ़वाहों पर विराम लगाने का मौसम
बहुत था शोर गाड़ियों की घर घर, जहाजों की फुर्र फुर्र का
साफ़ हवा करती बातें, चिड़ियों के चहचहाने का मौसम
बंद नहीं करनी मस्ती की दुकान, पूरे करने हैं घर पर सब अरमान
खेलें लूडो, साँप सीढ़ी, बच्चों के साथ बच्चे हो जाने का मौसम
होने लगे हैं चाँद के दीदार तो क्यों न करें हम सबसे प्यार
गिन लो तारे, आ गया चाँद की चाँदनी में नहाने का मौसम
आ गया फिर दादी, नानी के क्रिस्से सुनने सनाने का मौसम
परिवार के साथ अपने अपने घर में समय बिताने का मौसम
लड़ने को दुश्मन से रहना है घर में पैरों पर लगा के लगाम
हिम्मत अब न हारने का, हौसलों से उड़ते जाने का मौसम



जुदा जुदा सा हो गया था भीड़ में मैं खुद से
तन्हाई में मेरे घर ने मेरी अंगुली थाम रखी है

घर के लिए ही तो रहता था मैं घर से बाहर
आज घर ने मेरे पैरों में लगाम लगा रखी है

कह रहा हूँ सब कछु जो मेरे मन में आ रहा
रुठने नहीं देता बात हर मेरी घर ने मान रखी है

बिखर जाता मैं इस तूफान में तिनके की तरह
वो घर है मेरे पास तो चेहरे पर मुस्कान रखी है

मेरी ज़रूरत का हर सामान यहाँ जो चाहूँ मिलता
खोल के मेरे लिए इस घर ने अपनी दुकान रखी है

खो जाता भीड़ में तो कोई पहचानता भी न मुझे
खुदा का शुक्र है घर ने छुपा के मेरी पहचान रखी है

जुदा जुदा सा हो गया था भीड़ में मैं खुद से
तन्हाई में मेरे घर ने मेरी अंगुली थाम रखी है

घर के लिए ही तो रहता था मैं घर से बाहर
आज घर ने मेरे पैरों में लगाम लगा रखी है

कहाँ आदमी से आज मिल रहा आदमी
घरों में बंद है कहाँ निकल रहा आदमी
गले और हाथ मिलाना भूल चुका है वो
आज देखो सादगी से मिल रहा आदमी
आदमी की हर चाहत तो आदमी से थी
आदमी को बेख़ुदी से मिल रहा आदमी
हँसी में भी दूर था ग़म में दूर था आदमी
अपनों के साथ खुशी से मिल रहा आदमी
डरा नहीं आदमी अभी मरा भी नहीं आदमी
मिला नहीं था तो बेबसी से मिल रहा आदमी
खानाबदोश हो चुका था बस खाने के लिए
अकेले अपनी आवारगी से मिल रहा आदमी
साफ़ हवा, खिली धूप, हरे पेड़ और पंछी
घर में रहकर ज़िन्दगी से मिल रहा आदमी
कहाँ आदमी से आज मिल रहा आदमी
घरों में बंद है कहाँ निकल रहा आदमी
गले और हाथ मिलाना भूल चुका है वो
आज देखो सादगी से मिल रहा आदमी



माना मुसीबतें चट्टान सी हैं
पर हो जाएँगी चूर चूर तेरे हौसलों से टकराकर
तू सिपाही है और जीतना है तुझे
ये जंग जीती नहीं जा सकती यहाँ घबराकर
मत कर कोई गिला, घर को बना ले अभेद किला
काट दे ये दिन अब तू लड़कर और मुस्कुराकर
जीतेगा तू ही चाहे मुश्किलें हजार
बस तू कुछ दिन घर में गुजार....
बस तू कुछ दिन घर में गुजार....

माना दुश्मन अदृश्य है
ये बढ़ा कठिन दृश्य है
संकल्प, संयम, हौसला तेरे शस्त्र हैं
साथ तेरे अपने, घर और यादों का इत्र है
तेरा हौसला और शक्ति तो सर्वत्र है
खींच ले लक्ष्मण रेखा तू अपने घर के बाहर
बस तू कुछ दिन घर में गुजार....
बस तू कुछ दिन घर में गुजार....

नहीं सिखाता कोई परिंदों का यहाँ उड़ना
आसमान कहाँ दूर उसके लिए जिसे है बढ़ना
सोच को बदल अपनी तझे नज़ारों को है बदलना
तूफ़ान है बहुत कश्ती को किनारे तक लेकर चलना
अपने हाथों से तुझे बुलंद अपनी किस्मत को करना
माँगता हिन्दुस्तान तज़्ज़से समझकर अधिकार
बस तू कुछ दिन घर में गुजार....
बस तू कुछ दिन घर में गुजार....



ये कैसा खदा ने दिया फरमान ज़िन्दगी
ज़िन्दगी से बेज़ार, परेशान ज़िन्दगी
सोचती कहाँ होगी सबह, शाम ज़िन्दगी
तेरे लिए भी दे रही है अब पैशाम ज़िन्दगी
सोच मत तू ज़िन्दगी का दिलासा बन जा
भूखा न रहे कोई तू अन्रदाता बन जा

सूनी हो रही गलियाँ, शहर और बस्तियाँ
उड़ा जा रहा इंसान कैसा तूफ़ान, आँधियाँ
साहिल तक पहुँचना है मुश्किल इनका
लगता है डूब जाएँगी ये सारी कश्तियाँ
पहुँचा दें साहिल पर तू लंगर बन जा
भूखा न रहे कोई तू अन्रदाता बन जा

भूखे कैसे आएगी नींद खराब हालात
इंसान है तू तो दे इंसानियत का साथ
बहत है बेघर खा रहे ठोकर दर बदर
लेने को बहुत है और देने को कम हैं हाथ
बदल दे क्रिस्मत तू विधाता बन जा
भूखा न रहे कोई तू अन्रदाता बन जा

काम नहीं ज़िन्दगी घरों में रहने को मजबूर
कैसे पालेगा परिवार का पेट अब मज़दूर
ले ये ज़िम्मेदारी कर उसकी परेशानी दूर
कर कुछ ऐसा कि इंसानियत करें गुरुर
अब अपने तेरे का फ़र्क ज़रा सा बन जा
भूखा न रहे कोई तू अन्रदाता बन जा



अपने घर में आज अपनों का अधिकार है
घर घर में आज देखो पहले सा परिवार है
घर में कछ भी करो, है पूरी छूट सबको यहाँ
लक्ष्मण रेखा खिंची है, बन्द घर का द्वार है
हूँ अपनों के साथ इससे बड़ी क्या होगी बात
करेंगे मुकाबला हम हर मुसीबत स्वीकार है
समय नहीं था कि घर रहें, बाहर रहे हमेशा
घर में रहने का सपना आज हुआ साकार है
नहीं है दिक्कत, लड़ने की है हिम्मत, शिद्धत
हर समय साथ देने वाली पास हमारे सरकार है
जीतना है तो घर में रहना होगा, हर हाल में
हौसलों से होती उड़ान हम उड़ने को तैयार हैं
अपने घर में आज अपनों का अधिकार है
घर घर में आज देखो पहले सा परिवार है
घर में कछ भी करो, है पूरी छूट सबको यहाँ
लक्ष्मण रेखा खिंची है, बन्द घर का द्वार है



लगा है ताला हर तरफ़, सड़कों में, शहर में और घरों में,
ऐसी कौन सी जगह जहाँ लगा ताला नहीं
करो कुछ अच्छा काम, अच्छे कामों पर कोई ताला नहीं

बेजान सी हो गई ज़िन्दगी, हैरान सी हो गई ज़िन्दगी
ज़िन्दगी करने को पलायन मजबूर है ज़िन्दगी
बढ़ा हाथ प्यार के, दे उसे राहत जिसे होता नसीब अब निवाला नहीं

कर लिया फ़ैसला, रखेंगे हिम्मत और हौसला
आबाद रहेगी हर बस्ती और हर एक घोसला
करने का ये फ़ैसला हमने आज कोई सिक्का तो उछाला नहीं

डर कर रहा घर, घर घर में पैर पसार रहा डर
क्या होगी चाल हमारी देख रही दुनिया की नज़र
सोच बदल, अब जा संभल, फिर मत कहना हमने तुझे सँभाला नहीं

कैसे देख सकता हूँ मैं भूख से किसी को मरते हुए
नहीं देखा जाता अब इंसान हमसे मौत से डरते हुए
लानी हैं खुशियाँ, लड़ना है तूफ़ानों से, ज़िन्दगी न कहे कि हमने उसे पाला नहीं

कट गया सब कुछ तो कट जाएगी ये स्याहा काली रात
बजेंगी तालियाँ, होगी वाह वाह, ग़ज़ब की है तेरी बात
अंधेरा हटता नहीं जब तक अंधेरों को चीरकर आता रोज़ उजाला नहीं

करो कुछ अच्छा काम, अच्छे कामों पर कोई ताला नहीं



अम्बर हुआ नीलाम्बर, धरती हुई धानी है
हवाओं में ताजगी, साँस लेने में आसानी है
घर में स्वक्ने को तू क्रैद मत समझ मेरे यार
घर में घरवाले हैं साथ तो क्या परेशानी है
जानते बूझते निकल रहा जो, मिल रहा जो
इंसान का दुश्मन, इंसानियत से बेमानी है
किसी ने तो की होगी ये ख़ता जो मिली सज्जा
कहते हैं वो ये ख़ता तो है पर ख़ता अनजानी है
तारे टिमटिमा रहे, चाँद धरती पर उतरने को बेताब
देख चाँद को वहाँ वहाँ, जहाँ जहाँ पर पानी है
बढ़ा दिए हाथ पकड़ने को हमने, देख तितलियाँ
उम्र का ये पड़ाव, ज़िन्दगी बचपन की दिवानी है
अम्बर हुआ नीलाम्बर, धरती हुई धानी है
हवाओं में ताजगी, साँस लेने में आसानी है
घर में स्वक्ने को तू क्रैद मत समझ मेरे यार
घर में घरवाले हैं साथ तो क्या परेशानी है



कुछ काम अपनों के लिए
कुछ काम उनके भविष्य, सपनों के लिए
कुछ काम अपनों के लिए
करता हूँ मैं आभार व्यक्त
जो रहे साथ मेरे हर वक्त
मुझे हर तरह से आराम रहा
ग़ज़ब की है उनकी शिद्दत

कुछ काम उन सुनहरे लम्हों के लिए
कुछ काम अपनों के लिए
कुछ काम उनके भविष्य, सपनों के लिए
कुछ काम अपनों के लिए
ख़बश रहें वो जो आसपास हैं
मेरी शक्ति मेरा विश्वास हैं
कर्तव्य मैं भी अपना निभाता
मेरे अपने मेरे बड़े ख़ास हैं

कुछ काम उन सुनहरे पत्रों के लिए
कुछ काम अपनों के लिए
कुछ काम उनके भविष्य, सपनों के लिए
कुछ काम अपनों के लिए



घनघोर अंधेरा छाया है
हम सबके साथ होने का समय आया है
जाने किस किस ने हमें बहकाया है
अंधेरा था शायद इसलिए दिख न पाया है
बंद करो आँखों को अंतर्मन की सनो
हराने अंधेरों को तुम प्रकाश को चुनो
अकेले नहीं तुम साथ हैं १३० करोड़
न जाने पाए गरीब अपने घरों को छोड़
बंद कर दो सब नकारात्मक बातों की बत्ती
आशा की लौ, दीया, मोमबत्ती
अब तम जलाओ.....
एक हौं तम, एक साथ, ५ अप्रैल को ९ बजे,
ये पूरी दुनिया को बताओ.....

सिर्फ़ और सिर्फ़ माँगते ९ मिनट पंत प्रधान
हम एक हैं, एक साथ दिखा देगा हिन्दुस्तान
हाथों में लिये खड़े होंगे बच्चे, बूढ़े, जवान
लड़ना है नहीं डरना है जीतना है हमारी पहचान
समय है ये गरीब को देने का दिलासा, निवाला
समय है भगाने निराशाओं को, फैला कर आशाओं का उजाला
समय है अपने अंदर झांकने का, सब्र के साथ लगा कर पैरों पर ताला
समय है अपने हाथों से चारों तरफ़ फैलाने को उजाला
सामाजिक दूरी का करना पालन बहुत बहुत ज़रूरी है
तोड़नी है ये कड़ी और इसके लिए सबसे अहम बीच हमारे दूरी है
चकाचौंथ हो जाएँ आँखें दश्मन की देख एकता की रोशनी उसे ऐसे भगाओ
एक हो तम, एक साथ, ५ अप्रैल को ९ बजे,
ये पूरी दुनिया को बताओ.....

याद रखना ५ अप्रैल को ९ बजे ९ मिनट तक
फैलाना है आपको आशाओं का उजाला करेंगे निराशाओं का मुँह काला।



शमार कर मुझे न तू इस भीड़ में अभी
मैं इस तूफान में खुद को बचा के निकलूँगा,

भले ही धिरा हूँ मैं अंधेरों के बीच में आज
मैं एक एक हाथ में मशाल जला के निकलूँगा,

हरा दूँगा निराशाओं के सब अंधेरों को अब,
मैं आशाओं के दीप हाथों में जला के निकलूँगा...

ये लड़ाई नहीं खास, आम की, ये लड़ाई है हिन्दुस्तान की
मैं अमीर-गरीब, जात-पात, के फ़र्क को मिटा के निकलूँगा....

वो सब जो बचा रहे हैं जान, बन चुके हैं हमारे भगवान
मैं डाक्टरों, पुलिस, नसों और सभी के सजदे में सिर झुका के निकलूँगा

हार रहा जिससे पूरा विश्व, हिन्दुस्तान कर रहा डट कर मुक़ाबला
हरा दूँगा दुश्मन को, मैं वो नई मिसाल बना के निकलूँगा

ये जो है आज दूरी, वो जीतने के लिए है बहत ज़रूरी
मनाएँगे जीत का जश्न, मिलने सबसे मैं बाँहें फैला के निकलूँगा



संयम को अपनी शक्ति बना और अपना तू हथियार बना
करने को उजाला मिट्ठी का एक दीया जला, अंधियारा मिटा
कर ले तू लक्ष्य निर्धारित, जीत होगी तेरी हिम्मत पर आधारित
चीर दे अपनी एकता के प्रकाश से घनघोर अंधेरे की अब घटा
आज लिखना है इतिहास हमें, जगाना है विश्वास हमें
हराने को अंधकार अब तू उजाले को अपने अंदर बसा
अंधकार का कोई वजूद नहीं यहाँ ये बात हम समझ लें
बन जा दर्पण प्रकाश का तू उसमें हौसलों का प्रतिबिंब दिखा
कर जाए कुछ भी हिन्दुस्तानी जो करने पर वो आ जाए
बड़े बड़े अंधेरों को खाक में मिला देता है यहाँ दीपक नन्हा
देश में करने की उजाला ज़िम्मेदारी है हर एक देशवासी पर
सब निभाएँगे अपने हिस्से की, तू अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी निभा
संयम को अपनी शक्ति बना और अपना तू हथियार बना
करने को उजाला मिट्ठी का एक दीया जला, अंधियारा मिटा



देश में ज़ज्बे और उम्मीद के उजालों की ज़िम्मेदारी है हम पर
जलाएँगे हौसलों के दीये, मोमबत्ती, कोई और ख़्वाहिश नहीं
चूर चूर कर दें मुसीबतें चट्टानें जैसी, पहाड़ों से टकरा जाएँ
हौसलों से है उड़ान हमारी, हमारे हौसलों की कोई पैमाइश नहीं
बस कछ दिन की है बात, रहो अपने घरों में बनाकर दूरी
माँगता है हिन्दुस्तान सामाजिक दूरी, करता और कोई फ़रमाइश नहीं
भाग जाएगा दुश्मन भी पीठ दिखाकर, देखकर हमारा जुनून
हार सकते नहीं हम, चलेगी दुश्मन की कोई ज़ोर आज़माइश नहीं
अंधेरों को चीर के जलाएँगे दीये, टिमटिमाएँगे आशाओं के जुगनू
हौसलों के उजालों की देखी होगी किसी ने यहाँ ऐसी नुमाइश नहीं
तोड़ देंगे ये कड़ी, आने को है बस वो घड़ी, जनता बनकर दीवार खड़ी
ज्यादा दिन तक दुश्मन की अब हिन्दुस्तान में रहेगी रिहाइश नहीं
देश में ज़ज्बे और उम्मीद के उजालों की ज़िम्मेदारी है हम पर
जलाएँगे हौसलों के दीये, मोमबत्ती, कोई और ख़्वाहिश नहीं
चूर चूर कर दें मुसीबतें चट्टानें जैसी, पहाड़ों से टकरा जाएँ
हौसलों से है उड़ान हमारी, हमारे हौसलों की कोई पैमाइश नहीं



दुश्मन डर गया, कछ ऐसा कर गए हम
चीर अंधेरों को, रोशनी से भर गए हम
बातें हौसले, ज़ज्बे, उम्मीद की होने लगी
जहाँ में चलकर जिधर जिधर भी गए हम
रहे दूर दूर पर उजालों के पास आ गए
फैलाने को रोशनी जहाँ में बिखर गए हम
डगमगा रही दुनिया, जगमगा रहे हिन्दुस्तानी
फैलाने प्रकाश उम्मीदों का आज उतर गए हम
रह रहे घरों में अपने लक्ष्मण रेखा ली है खींच
एकता दिखा दी हमने कितने निखर गए हम
दुश्मन हैरान है, परेशान है, ये कैसा हिन्दुस्तान है
हराने दुश्मन को अपनी हृदों से गुजर गए हम
दुश्मन डर गया, कछ ऐसा कर गए हम
चीर अंधेरों को, रोशनी से भर गए हम
बातें हौसले, ज़ज्बे, उम्मीद की होने लगी
जहाँ में चलकर जिधर जिधर भी गए हम



हुई नहीं मुलाक़ात, आ रही याद, वो लाल पीली बत्तियाँ
जाना मना है बाहर, बना ली हैं घर में ही छोटी छोटी पगड़ंडियाँ

जाने को मन है बेताब, मत पूछो कैसे कट रहे दिन और रात
ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रही हैं ये गर्मी की छुट्टियाँ

सैर करने को तो घर का बरामदा है या छत है छोटी सी यहाँ
बना लिया खुद को बच्चा, भाग के पकड़ रहे हैं हम तितलियाँ

शोर तो प्रकृति कर रही आज ग़ज़ब है पक्षियों की चहचहाहट
सुनाई नहीं दे रही है मस्जिदों से अज्ञान, मंदिरों से अब घंटियाँ

काश लौट आए वो बचपन जब खेलने को बहत कछ था
और नहीं कुछ तो लिखकर और पढ़कर खुश होते थे हम चिट्ठियाँ

जाने कब ख़त्म होगा ये गृह वास, कब होंगे अपने हमारे पास
सुलझा ली हैं हमने बहुत अब तो बची नहीं हैं नई नई गुत्थियाँ

हुई नहीं मुलाक़ात, आ रही याद, वो लाल पीली बत्तियाँ
जाना मना है बाहर, बना ली हैं घर में ही छोटी छोटी पगड़ंडियाँ

जाने को मन है बेताब, मत पूछो कैसे कट रहे दिन और रात
ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रही हैं ये गर्मी की छुट्टियाँ



गिला करो, शिकवा करो, प्यार करो, कि मैं घर में हूँ
मज़े में हूँ, बस तुम मेरा एतबार करो, कि मैं घर में हूँ

अब रोशन करो महफिल उम्मीद के चिरागों से तुम आज
हौसलों की महफिल में मुझे शुभार करो, कि मैं घर में हूँ

बहुत परेशान हो गया हूँ मैं इन आती जाती हिचकियों से
मेरे दोस्तों मुझे इस क़दर न याद करो, कि मैं घर में हूँ

निकल रहे वो घर से बाहर जान हथेली पर लेकर मेरे लिए
सिर झुकाकर शुक्रिया का इज़हार करो, कि मैं घर में हूँ

हर कहानी में घर है, और हर घर में कहानी है आज नई
सुनो पुरानी कहानी, नई कहानी तैयार करो, कि मैं घर में हूँ

मिला है मौका तो कर लो बातें अपनों के साथ, अपनों के लिए
बेशकीमती हैं ये लम्हे, उन्हें ना बेकार करो, कि मैं घर में हूँ

सनता हूँ सबकी, मैं अपनी कहता हूँ
मैं आजकल अपने पते पर रहता हूँ

मिल रहा खुद से आजकल रोज़ मैं
मैं करता खुद को बर्दाशत, सहता हूँ

घर का कोना कोना जानने लगा मझे
मैं मिलूँ न खुद को इसलिए छुपता हूँ

मेरा खुद के साथ रहना सबसे मुश्किल
मैं खुद ही जलता और खुद बुझता हूँ

आने जाने वालो में बस मैं ही हूँ आज
मैं ही आता और खुद मैं ही निकलता हूँ

मैंने कर लिया लक्ष्य निर्धारित मंज़िल का
मैं ही यहाँ चलता और खुद मैं ही स्कता हूँ

सनता हूँ सबकी, मैं अपनी कहता हूँ
मैं आजकल अपने पते पर रहता हूँ

मिल रहा खुद से आजकल रोज़ मैं
मैं करता खुद को बर्दाशत, सहता हूँ



देश में ये कैसा आज हादसा हुआ
खौफ से हर शख्स अब सहमा हुआ

जब अंधेरों ने लिए पाँव पसार अपने
रोशनी लिए हुए ये घर अपना हुआ

कुछ दिन ही हुए हैं हमें घरों में यूँ तो
लगता जैसे सड़कों पे जाए अरसा हुआ

घूम रहे हैं लिए मौत आस्तीनों में वो
देखने को बेक़रार इंसान मरता हुआ

बचाने को जान लगा रहे हैं जो जी जान
घर घर आज उनके लिए सजदा हुआ

रिश्ते नाते, दोस्त यार सब हैं आज भी
मैं बस कुछ देर के लिए उनसे जुदा हुआ

खुदा ने दिखा दिया, बस वो ही खुदा है
जब जब इंसान खुद यहाँ पर खुदा हुआ

मलाक्रात बहुत दिनों बाद हुई मेरी घर से
ढूँढते हैं सब मुझे मैं घर में गुमशुदा हुआ

देश में ये कैसा आज हादसा हुआ
खौफ से हर शख्स अब सहमा हुआ

जब अंधेरों ने लिए पाँव पसार अपने
रोशनी लिए हुए ये घर अपना हुआ



कठिन दौर से गुजर रहा देश
मैं बिल्कुल न अब घबराऊँगा
निभाऊँगा मैं अपनी ज़िम्मेदारी
घर के बाहर कदम न बढ़ाऊँगा
क्या करने से क्या हो सकता है
जन जन को अब ये बतलाऊँगा
प्रयास करने से जीत जाएँगे हम
उम्मीदों के दीपक मैं जलाऊँगा
आसमानों तक होगी उड़ान हमारी
हौसलों से मैं अपने उड़ता जाऊँगा
सफ्रेदपोश बन गए भगवान हमारे
उनके सजदे मैं सिर को झुकाऊँगा
जो कोई नहीं कर सका वो करेंगे हम
विश्व पटल पर चमक के दिखलाऊँगा
कठिन दौर से गुजर रहा देश
मैं बिल्कुल न अब घबराऊँगा
निभाऊँगा मैं अपनी ज़िम्मेदारी
घर के बाहर कदम न बढ़ाऊँगा



क़दम हैं थर्मे थर्मे आज, बाहरी दुनिया से न कोई हमारा ताल्लुक है
घर है, यादें हैं और घर में यादों को भरने के लिए यादों की गुल्लक है
मैं नहीं सोचूँगा, आप नहीं सोचेंगे, वो, ये नहीं सोचेंगे तो कौन सोचेगा
मेरा, तेरा नहीं, इसका, उसका नहीं, हिन्दुस्तान हम सबका मुल्क है
कुछ नहीं माँगा आज तक, बस हमेशा दिया, छत, प्यार, सम्मान
आज माँगता हिन्दुस्तान संयम तुझसे, समझ ये छोटा सा शुल्क है
विश्व डगमगाया है, हिन्दुस्तान जगमगाया है, हमारी एकता से ये हो पाया है
मेरे तेरे से नहीं, ये लड़ाई हम से जीती जाएगी, बस जीतने की कसक है
कछ दिन और, बस कछ दिन, होगा फिर जीत का जश्न, दिवाली मनाएँगे
वो निभा रहे अपना फ़र्ज़, तू भी निभा, माँगता हिन्दुस्तान समझकर अपना हक्क है
क़दम हैं थर्मे थर्मे आज, बाहरी दुनिया से न कोई हमारा ताल्लुक है
घर है, यादें हैं और घर में यादों को भरने के लिए यादों की गुल्लक है



समय सख्त है, मंजिल अभी दूर है
घर में रहकर, बस थोड़ा बसर कीजिए

आप अकेले नहीं, क्रहर से परेशान
घर में रहकर, बस और बस सब्र कीजिए

सँभाल लेगा आज आपको अपना घर
घर में रहकर, घर की अपने क्रदर कीजिए

सख्त ज़रूरत है खुदा की रहमत की
घर में रहकर, पैदा दुआओं में असर कीजिए

बना लीजिए घर को गली और मौहल्ला
घर में रहकर, घर की गलियों में सफर कीजिए

माँगता है देश आपसे कुछ जो देना है
घर में रहकर, देश को वो सब नज़र कीजिए

दुश्मन चालाक है, हार मानने को नहीं तैयार
घर में रहकर, दुश्मन का कम क्रहर कीजिए

समय सख्त है, मंजिल अभी दूर है
घर में रहकर, बस थोड़ा बसर कीजिए

आप अकेले नहीं, क्रहर से परेशान
घर में रहकर, बस और बस सब्र कीजिए



तमन्नाएँ जब से रुख्सत हो गई
हमें यहाँ फुर्सत ही फुर्सत हो गई
हम बस घर के होकर ही रह गए
और घर ही हमारी ज़स्त हो गई

समय नहीं, समय नहीं, कहा बहुत
समय बहुत पूरी ये हसरत हो गई

समझने लगे हैं अपनों को हम अब
रिश्तों में ग़ज़ब की बरकत हो गई

खुद की सुरक्षा है देश की सुरक्षा
हाथों में खुद की किस्मत हो गई

जानता नहीं वो हमें तो घुसा घर में
दुश्मन की देखो बड़ी हिम्मत हो गई

जान होगी जहान, हिन्दस्तान होगा
जीतना है, जीतने की शिद्धत हो गई

कछ दिन और बस रहना है घरों में
वैसे भी अभी कहाँ रहते मुद्दत हो गई

कुछ तो अच्छा भी हुआ है देखो तो
प्रकृति में आज ग़ज़ब रंगत हो गई

हम बस घर के होकर ही रह गए
और घर ही हमारी ज़स्त हो गई

तमन्नाएँ जब से स्वख्सत हो गई
हमें यहाँ फुर्सत ही फुर्सत हो गई



नाज़ुक वक्त है बड़ा
अदृश्य दुश्मन है खड़ा
अलग सा ये युद्ध है बड़ा
जीतेगा वो ही जो अलग अलग रहकर यहाँ लड़ा

दुश्मन बहुत छोटा दिखता नहीं
बड़ा, छोटा कोई इससे बचता नहीं
बचेगा वो ही जो घर से निकलता नहीं
रखना है संयम, हिम्मत और हौसला हमें तगड़ा

संकट का समय भी गजरेगा
जब मानव यहाँ सुधरेगा
रखेगा सावधानी, नहीं डरेगा
जान बचाने वाले कर रहे हैं काम आज बहुत बड़ा

समय की माँग ये नहीं मजबूरी
सबको रखनी है सामाजिक दूरी
बार बार हाथ धोना भी है ज़स्ती
रह कर घर में भर लो तुम कुछ मीठी यादों का घड़ा

करके दिखा देगा हिन्दस्तान
कर न पाया विश्व जो काम
कशल हाथों में है अब कमान
देने साथ सबका दृढ़ निश्चय के साथ वो आज खड़ा

नाज़ुक वक्त है बड़ा
अदृश्य दुश्मन है खड़ा
अलग सा ये युद्ध है बड़ा
जीतेगा वो ही जो अलग अलग रहकर यहाँ लड़ा



देश के लिए बहुत कुछ करने की चाह
न डरे मश्किलों से न किसी की परवाह
चल पड़े वो अग्निपथ पर करने विकास
खुद बना रहे रास्ते, खुद चुनी है ये राह

१३० करोड़ की आस हो आप.....
मोदी जी बड़े खास हो आप.....

चना देश ने आप में कुछ है ग़ज़ब बात
चुनौतियों से हुई सफर की शुरूआत
धूमें विश्व ले आए सबको अपने साथ
सुधरने लगे हैं देश की यहाँ हालात

१३० करोड़ के विश्वास हो आप.....
मोदी जी बड़े खास हो आप.....

सुलझा दी आपने न जाने कितनी गतिधार्याँ
संगम बना दिया सब थी विषम परिस्थितियाँ
गरीब के बारे में सोचा बहुत किया बहुत कुछ
जलाए दिये कहा आपने बजाई तालियाँ

१३० करोड़ के लिए विकास हो आप.....
मोदी जी बड़े खास हो आप.....

विश्व पर खतरा, कीटाण छोटा सा मिला
जब थम नहीं रहा था संक्रमण का सिलसिला
कर दिया सब बंद करा आपने एक नई पहल
कर दिए मुस्तैद जीवन रक्षक जहाँ ये पला

१३० करोड़ के प्रयास हो आप.....
मोदी जी बड़े खास हो आप.....

सुलझा दी आपने न जाने कितनी गतिधार्याँ
संगम बना दिया सब थी विषम परिस्थितियाँ
गरीब के बारे में सोचा बहुत किया बहुत कुछ
जलाए दिये कहा आपने बजाई तालियाँ

१३० करोड़ के लिए अहसास हो आप.....
मोदी जी बड़े खास हो आप.....



यादों ने मेरी मुझको आज पुकारा है
जिन्दगी के लिए काफ़ी घर हमारा है
कदमों को रोक सकते हैं तो रोक लो
मान लो स्वक गई समय की धारा है
कभी कट जाती, कभी काट देता गोटी
साँप से बच रहा मैं, ग़ज़ब ये नज़ारा है
घर बार बार लिपट के रोने लगता है
बड़े दिनों बाद समय घर में गुज़ारा है
मोड़ बहुत आए जिन्दगी में अब तक
अब किसी मोड़ पर मुड़ना न गवारा है
कश्ती को अपनी साहिल तक ले जाना
जानते हैं सब कि बहुत दूर किनारा है
तारों की छाँव में बीत रही है रातें हैं आज
नीले आसमान का क्या ग़ज़ब नजारा है
ताश के ५२ पत्ते खेलें तरह तरह के खेल
अपनों से जीता और अपनों से हारा है
संभल जाओ, संभल जाओ कोई कहता
सुनाई देता मझे जो प्रकृति का इशारा है



गर्व से सीना चौड़ा, बहुत हिन्दुस्तान रोया है
माँ भारती ने अपना एक लाल आज खोया है

सब कछ सहा, किया पर पीछे नहीं हटे वो
बचाने कितनी जान यहाँ हर पल रहे डटे वो

कितनी ज़िन्दगी मुस्कराई जो उन्होंने बचाई
कह गए अलविदा क्यों आज ऐसी सुबह आई

बस गए दिलों में बनकर भगवान सफ्रेद पोश
ग़ज़ब की दिखाई हिम्मत, ज़ज्बा और जोश

खुद चुनी ये राह की नहीं अपनी जान की परवाह
शहादत याद रखेगा हिन्दुस्तान बनकर गवाह

हमें देकर चैन की नीद वो हमेशा के लिए सोया है
गर्व से सीना चौड़ा, बहुत हिन्दुस्तान रोया है
माँ भारती ने अपना एक लाल आज खोया है



मझे रास्तों का न कोई खतरा, न डर है
मैं यहीं रह रहा हूँ और ये ही मेरा घर है
घरों में रोशन हो रही हैं जिन्दगियाँ आज
सब्राटा पसरा आज हुआ सुनसान शहर है
की होगी कोई हमने खता, मिल रही सज्जा
हमारी नादानियों की वजह से टूटा क़हर है
नाज़ है बहुत अपनी खुशकिस्मती पर
दुआ की थी, बहुत दुआओं में असर है
कर के बंद दरवाज़े घर के आज बैठा
घर मिला मुझे क्या ग़ज़ब मुकद्दर है
कोई नहीं रोकने और टोकने वाला मझे
दिल खोल कर हँसूंगा, हँसना अगर है
मौत घूम रही है बाहर बेताब मिलने को
जो चुपचाप बैठे वो ही आज सिकंदर है
जाना कहाँ है अब, जब मिला गया घर
घर ही मेरी मंज़िल और घर में सफ़र है
मझे रास्तों का न कोई खतरा, न डर है
मैं यहीं रह रहा हूँ और ये ही मेरा घर है



कल से आज बँधा है
पता चला घर क्या है

इंसान से दूर इंसान है
इंसान ने किया क्या है

सन्नाटों का शोर बहुत
शहर को ये हुआ क्या है

बंधे बंधे से क़दम हुए
थमा सा सफ़र क्या है

साँसों की डोर कमज़ोर
ज़िन्दगी में असर क्या है

ख़रीदार हैं बहुत यहाँ
पर यहाँ बिकता क्या है

भरोसे मत बैठो उसके
भगवान की इच्छा क्या है

जान बहुत सस्ती हो गई
इससे और सस्ता क्या है

बीमारी तो सब बता रहे
कोई बताए दवा क्या है

घुटन सी होने लगी है अब
बताइए अच्छी हवा क्या है

बस वो ही दो चार चेहरे
बदला बदला समां क्या है

थमाँ नहीं है ज़िन्दगी यहाँ
तो फिर यहाँ थमा क्या है

कल से आज बँधा है
पता चला घर क्या है

इंसान से दूर इंसान है
इंसान ने किया क्या है



बचाएगा तुझे जो तेरा घर ही वो जगह है
उड़ लिया बहुत आजा बुला रही सतह है

घर के लिए घर से बाहर रह लिए बहुत
आज घर में रहने की बड़ी मज़बूत वजह है

रहना है बस घर, और घर में ही रहना है
कोई बात कोई सुनेगा नहीं क्या जिरह है

बाहर बहुत अंधेरा है खो जाने का खतरा
देख घर में आज तेरे उजालों की सुबह है

कहना सुनना बहुत हुआ लड़ाई झागड़ा
दिलों में क्यों बसा रखी तुमने ये विरह है

साँसों के लिए आज सब कुछ करना है
शुक्र मना खुदा का साथ दे रही तेरी देह है

तेरे हौसलों से अनजान नहीं दुश्मन जानता
तभी जीत पर अपनी उसे भी आज संदेह है

बचाएगा तुझे जो तेरा घर ही वो जगह है
उड़ लिया बहुत आजा बुला रही सतह है

घर के लिए घर से बाहर रह लिए बहुत
आज घर में रहने की बड़ी मज़बूत वजह है



देश को बचाने के लिए कुछ ज़हमत करने की ज़स्त है
कटे फटे हैं किरदार यहाँ कुछ मरम्मत करने की ज़स्त है
आप तो सहमत हो कछ औरों को सहमत करने की ज़स्त है
डर डर के कुछ नहीं होगा थोड़ी हिम्मत करने की ज़स्त है
बहुत दिया है देश ने कछ देश की खिदमत करने की ज़स्त है
दुआ करनी है देश के लिए अब शिव्वत करने की ज़स्त है
कसनी है कमर अब यहाँ सबको कसरत करने की ज़स्त है
सोचना है देश के लिए भी थोड़ी मशक्कत करने की ज़स्त है
सही गलत किसके साथ है आप हिमाक्त करने की ज़स्त है
करनी पड़े चाहे अपनों के खिलाफ़ बगावत करने की ज़स्त है
बहुत हो चुका बस देशद्रोहियों के हौसले पस्त करने की ज़स्त है
जागना है हर पल खोल कर आँख बार बार ग़ाश्त करने की ज़स्त है



मैं हूँ घर में, घर है मेरा, मैं किधर जाऊँगा
रहना सीख लिया तो अब मैं निखर जाऊँगा

फैलाने खुशबू को अब मैं बिखर जाऊँगा
बुज्जिल न समझो मुझे कि मैं डर जाऊँगा

दिखा दूँगा करके ये समंदर भी पार मैं अब
जीतने को आज हर हद से मैं गुजर जाऊँगा

किया है वादा जो खद वो निभाना है ज़स्त
सोचना ये मत कि मैं वादे से मुकर जाऊँगा

बन कर तारा आँखों का चमकना है मुझे अब
दिलों में करूँगा राज, आँखों में उत्तर जाऊँगा

दिखा रहा रोज़ नया रास्ता मुझे मेरा घर आज
ले जाएगा जिधर जिधर मैं उधर उधर जाऊँगा

आज कोई काम नहीं घर में रहने का सुकूँ है
काम पर सोचता था कि कब मैं घर जाऊँगा

मैं हूँ घर में, घर है मेरा, मैं किधर जाऊँगा
रहना सीख लिया तो अब मैं निखर जाऊँगा

फैलाने खुशबू को अब मैं बिखर जाऊँगा
बुज्जिल न समझो मुझे कि मैं डर जाऊँगा



समय ने जैसे तो आज चलना छोड़ दिया
रिश्तों नातों ने भी अब मिलना छोड़ दिया
छोड़ दिया हमने भी सब कुछ आज देखो
देह ने हमारी भी यूँ ही भटकना छोड़ दिया

छोड़ा जो मोह इस मन ने आज हमारे
जोड़ नाता बुद्धि से हम आज सुधारें
कोई दर्द तो है नहीं है जो ये देह सहती
क्यों न कुछ दिन हम भी घर में गुज़ारें

चौखट लांघना बंद, आना जाना छोड़ दिया
आते जाते थे तो याद घर की सताती थी
कर कर फ़ोन वो हमें जल्दी घर बलाती थी
घर के लिए बेघर होकर धूमता था ये मन
बाहर जब ज़िन्दगी घर के सपने सजाती थी
हक्कीकत में आ गए सपने देखना छोड़ दिया

किश्तें भर भर के ये घर बनाया था हमने
जलाए थे उम्मीदों के दीप न दिये बङ्गने
हमारे सख दख का बना घर हमेशा गवाह
पता नहीं क्यों आज लगे हैं क़दम हमारे थमने
घर के लिए मैंने घर से निकलना छोड़ दिया

मन को न रखना खाली, समय है एकांत का
संयम, हौसला रखना और मन को शांत का
करो वो सब कुछ जो कर न पाए समय न था
लिखने नया अध्याय और सुनाने नए वृत्तांत का

समझ को भूल ज्यादा समझना छोड़ दिया

समय ने जैसे तो आज चलना छोड़ दिया
रिश्तों नातों ने भी अब मिलना छोड़ दिया
छोड़ दिया हमने भी सब कुछ आज देखो
देह ने हमारी भी यूँ ही भटकना छोड़ दिया



घर घर में देखो इकट्ठा आज परिवार हो गए
सप्ताह के सातों दिन आज इतवार हो गए
सोचते हैं कि अगर घर न होता तो क्या होता
बाहों में लिए बैठा हमें, हम शुक्रगुज़ार हो गए
खींच ली है लक्ष्मण रेखा घर के बाहर आज
निकलेंगे न निकलने देंगे हम चौकीदार हो गए
जान भी रहेगी, जहान रहेगा, हिन्दुस्तान रहेगा
देखता विश्व हिन्दुस्तानी बड़े होशियार हो गए
बीमारी को नहीं छुपाना है, खलकर बताना है
संयम, सामाजिक दूरी हमारे हथियार हो गए
बढ़ानी है अपनी हमें रोगों से लड़ने की शक्ति
अदृश्य है दुश्मन भले ही हम भी तैयार हो गए
सातों बातें आपकी साथ हमारे निभाएँगे वचन
जान बचाने वालों के आगे न तमस्तक बार बार हो गए
घर घर में देखो इकट्ठा आज परिवार हो गए
सप्ताह के सातों दिन आज इतवार हो गए
सोचते हैं कि अगर घर न होता तो क्या होता
बाहों में लिए बैठा हमें, हम शुक्रगुज़ार हो गए



हिन्दुस्तान के घर घर में चल रही “ परिस्थितियों की पाठशाला ”
पढ़ रहा है पाठ पढ़ा लिखा या हो पढ़ने वाला

“ ज ” से ज़िन्दगी

“ क ” से कोरोना का फंदा

“ द ” से दोनों खा रहे

“ ह ” से हमको ज़िन्दा

पक्षी गुनगुना रहे हैं, नीला आसमान

ज़िन्दगी हो गई है “ मौन ”

समझने को तैयार हैं हम सब कुछ

पर हमें समझाए “ कौन ”

बजा रहे घंटी, दिए से कर रहे हैं उजाला

हिन्दुस्तान के घर घर में चल रही “ परिस्थितियों की पाठशाला ”

ज़िन्दगी लगी रही भरने वो “ गुल्लक ” जो कभी भरी नहीं
पैसे थे “ गुल्लक ” में तो ज़िन्दगी यहाँ किसी से कभी डरी नहीं
आज किस काम के वो कपड़े, कार, बार बार सोचते हैं हम
मिल जाएँ पल दो पल सुकूँ के पैसे से भी वो दुकान खोजते हैं हम

“ ल ” से लक्ष्मण रेखा

“ ख ” से खिंची घर के बाहर

“ न ” से निकलना है मना

“ क ” से करना कोई व्यवहार

चलो करें हक्क अदा हिन्दुस्तान का जिसमें हमें देकर पनाह पाला

हिन्दुस्तान के घर घर में चल रही “ परिस्थितियों की पाठशाला ”

जाने कौन कौन सा पाठ हमें गया था पढ़ाया

पर ये पाठ जो आज पढ़ रहे वक्त ने पढ़ाया

जान रहेगी, जहान रहेगा, हिन्दुस्तान रहेगा

ये सबक़ हर शख्स को आज हर घर ने पढ़ाया

“ ग ” से गरीब का रखो ख्याल

“ य ” से करो योग सुबह शाम

“ ब ” से बढ़ाओ शरीर में शक्ति

“ स ” से सामाजिक दूरी आएगी काम

हालातों में मारे मारे नहीं फिर रहे क्योंकि हमारे घरों में हमें सँभाला

हिन्दुस्तान के घर घर में चल रही “ परिस्थितियों की पाठशाला ”

आज्ञादी गुमशुदा और वक्त की मार
खुलने का इंतज़ार, हसरतें बेशुमार
इंसान से इंसान जुदा, ख़त्म व्यवहार
मिलने का इंतज़ार, करने को प्यार

किस की ख़ता, किस पर हुआ वार
इंसान का ज़ुल्म, इंसानियत शर्मसार
किसी का नहीं पता, सनसान बाज़ार
बंद हैं ताल्लुक्रात, बंद हैं कारोबार

क्या है रज़ा, हमारी समझ से बाहर
स्क गई दुनिया, मचा है हाहाकार
थमता नहीं तूफँौ, कैसे लगे नैया पार
बढ़ते आँकड़े, सब हैं अब लाचार

प्रभु में आस्था, छोड़ दिया घर बार
बदल के स्वप्न, कर रहे परोपकार

क्या है बचा, क्या करें हम निसार
बचा रहे जान, शुक्रिये का इज़हार

आज्ञादी गुमशुदा और वक्त की मार
खुलने का इंतज़ार, हसरतें बेशुमार
इंसान से इंसान जुदा, ख़त्म व्यवहार
मिलने का इंतज़ार, करने को प्यार



मिट्टी ये हमारी हमें देगी मज़बूती
हमारी जड़ को मज़बूती मिलेगी
फूल, पत्तियों के साथ फिर से
हम सफर पर निकलेंगे,
अभी रहने दो बंद तमन्नाओं के पंख
सपने आँखों में कुछ और पलेंगे
थाम लो ज़िन्दगी और कदमों को
मंज़िल पर पहुँचने को नए रास्ते और मिलेंगे

जन जन की ये ही है अब पकार
कुछ दिन और तू घर में गुज़ार
मत दे दावत अपने दुश्मन को
जिसकी वजह से मचा है हाहाकार
हाथ मिलना छोड़, कर नमस्कार
हाथ धोने, मँह ढकने को कर आदत में शुमार
तू चलेगा जिस राह, सब उस पर चलेंगे
कुछ लोग साथ निभाने के वास्ते और मिलेंगे

अकेला नहीं तू साथ हैं तेरे सब
कुछ कर दिखाने का है वक़्त अब
जान बचाने को जान लगा रहे वो
लेकर स्वप्न भगवान का आ गए सब
दृঁढ तू ख़ुश रहने की कुछ वजह
काली रात ख़त्म, होने को है सुबह
घने अंधेरों में आशाओं के जगन् चमकेंगे
तू मुस्कुराएंगा तो लोग हँसते और मिलेंगे



एक था मैं, नेक था मैं....

शून्य के लिए लगी फिर शून्य की होड़
शून्य की शुरू हुई दूसरे शून्य की दौड़
शून्य से शून्य की यात्रा, संख्याओं से भरी
शून्य लिए मन, शून्य के लिए रोता था
शून्य कछ नहीं, शून्य में सब कुछ, शून्य से सब कुछ होता था
शून्य को अनन्त की चाह नहीं थी,
शून्य हो जाना था जिसकी शून्यता अनन्त थी
शून्य की दौड़ लगता है जैसे मनगढ़त थी

शून्य की खोज में, शून्य के रथ पर सवार
शून्य का कल ढूँढ़ता था, कर शून्य आज का निसार
शून्य का आलाप, शून्य का विलाप, शून्य का संताप
शून्य का कपाट लिए, करने शून्य को स्वीकार
शून्य की दौड़ में चल रहा था शून्य का सिलसिला
शून्य में खिला, शून्य में मिला, शून्य ही दिया तो शून्य ही मिला
शून्य की वो दौड़ जैसे शून्य के लिए अंत थी
शून्य की दौड़ लगता है जैसे मनगढ़त थी

शून्य के लिए, शून्य सा सिरफिरा हूँ मैं
शून्य के लिए किन हालातों से गुजरा हूँ मैं
शून्य मिला जब तो देख शून्य डरा हूँ मैं
शून्य ही शून्य से आज धिरा हूँ मैं
शून्य हो गया सब, शून्य ज़िन्दगी में शामिल है
शून्य से निकलना आज मुश्किल है
शून्य से निकलना चाहता, ज़िन्दगी शून्य में तंग थी
शून्य की दौड़ लगता है जैसे मनगढ़त थी
शून्य की दौड़ लगता है जैसे मनगढ़त थी

यकायक हमारी जिंदगी में
घर बहुत अहम हो गया,
देखकर हमें घर के आँगोश में....
खत्म दुश्मन का सब वहम हो गया

घर क्या होता है ये आज जाना है
घर की अहमियत को पहचाना है
घर की बातें क्या बताऊँ आपको मैं
घर से बाहर अब मुझे नहीं जाना है
घर ने दी खुशियाँ, खत्म हर ग़म हो गया

घर के लिए बेघर होकर मैं धूमता था
घर देता था आवाज़ कहाँ मैं सनता था
घर नहीं था पास, घर के सपने मैं बुनता था
घर, बाहर, मैं से, बाहर को मैं चुनता था
घर के लिए जैसे मेरा दूसरा जन्म हो गया

घर जिनके पास कितने ख़शनसीब हैं वो
घर में हैं सब आज घर के क्रीब हैं वो
घर होते हुए भी घर में नहीं रकीब हैं वो
घर छोटा बड़ा जो कहते बड़े अजीब हैं वो
घर के लिए सारे रिवाज, रस्म हो गया

घर के लिए घर छोड़ना अब मशिकल होगा
घर को बनाकर रखेगा घर जो क़ाबिल होगा
घर मकान नहीं, घर हर ज़िन्दगी में शामिल होगा
घर का होकर रहेगा जो उसे घर हासिल होगा
घर ने दिया आसरा, घर का रहमों कर्म हो गया

यकायक हमारी जिंदगी में
घर बहुत अहम हो गया,
देखकर हमें घर के आँगोश में....
खत्म दुश्मन का सब वहम हो गया



हमें कैसे, क्या मिला इसका हिसाब नहीं
उसके पास घर नहीं, मेरे पास प्यास नहीं
खुशी तेरी अपनी जगह मेरी अपनी जगह
खुश तू है अगर बहुत तो मैं भी उदास नहीं
मशक्कत बहुत है यहाँ आज जीने के लिए
निकल जाएँ घर से ये यहाँ पर रिवाज़ नहीं
जी रहे हैं हम ज़िन्दगी तरीका अलग अलग
हल्ला तेरे यहाँ मेरी खुशियों में आवाज़ नहीं
समय पर तू बदल जाता पर मैं नहीं बदलता
हर समय बेहतर तेरा मेरे लिये क्यों आज नहीं
इंसान सब हैं पर अलग अलग से दिखते
क्यों हैं ये फ़र्क किसी के पास ये जवाब नहीं
हमें कैसे, क्या मिला इसका हिसाब नहीं
उसके पास घर नहीं, मेरे पास प्यास नहीं
खुशी तेरी अपनी जगह मेरी अपनी जगह
खुश तू है अगर बहुत तो मैं भी उदास नहीं



किसी भी भूकंप, सूनामी, युद्ध,
या वैश्विक महामारी के बाद या उस समय
एक भूकंप सा आता है हमारे अंदर!!!!

जब विश्वास की चट्टानें
बदलती हैं अपना स्थान
खिसकने लगती है विचारों की आंतरिक प्लेटें
मन के महासागर में उमड़ती हैं
संवेदनाओं की सुनामी लहरें
देखकर कोई त्रासदी मन दहलता है
सहम जाते हैं हम, मँह से कुछ नहीं निकलता है
और तब होता है जन्म कविता का!!!!!

कविता जिसमें जीने मरने के बारे में सोचा गया
कविता जिसमें अपने बचने के बारे में सोचा गया
कविता जिसमें अपनों के बारे में सोचा गया
कविता जिसमें दोस्तों, दुश्मनों के बारे में सोचा गया

कविता जिसमें अच्छे-बुरे कर्म समाने आने लगे
कविता जिसमें पल पल हम मरने का सोच डरने लगे
कविता जिसमें सब रिश्ते हम निभाने लगे
कविता जिसमें मौत से नज़रें हम चुराने लगे

कविता पर कोई उनके बारे में न लिखी गयी जो चले गये
कविता पर कोई न उनके बारे में जो मौत के द्वारा निगले गये

कविता जो मन की भावनायें प्रस्तुत करती रही
ज़िन्दगी मरती रही, तरसती रही, सुबकती रही
हौसले और उम्मीदों की लौ आज जलती रही
मौत के हवाले सांसे आँखमिचौलीयाँ करती रहीं
सच है, सच है मौत है सिफ़र, फिर भी ज़िन्दगी डरती रही
जीने के लिये पल पल वो बस प्रयास करती रही

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी की वजह से जान गँवा चके मेरे प्यारे
देशवासियों और पूरे विश्व के मानवजाति के इंसानों को मेरी भावपूर्ण
श्रद्धांजली और उनके परिजनों को भगवान् इस दुख को सहने की शक्ति
प्रदान करें



मंदिरों और अपने सभी पूजा घरों से निकल के
आ गए हैं आज भगवान अपना रूप बदल के
कहीं पहनी खाकी, कहीं पहने हैं वस्त्र सफेद
कर रहे वो अपना काम बहुत संभल संभल के
बंद कर दिए आज अपने सब घर वो नहीं वहाँ
हिन्दुस्तान के अस्पतालों में आए हैं वो चल के
कहते हैं रूप अनेक भगवान के सच है ये बात
मँह ढक कर आते होते नहीं दर्शन हमें असल के
क्रहर ये जो आज आया, छाया अंधेरों का साया
बने रक्षक, बर्बाद होती इंसानियत की फसल के
ये सृष्टि बनाई जिसने वो ही करते बचाने के काम
दो साथ इनका घरों से अपने तुम ना निकल के
चौकस हैं सड़कों, चौराहों पर, घर घर आते हैं वो
बन गए हैं वो निर्माता हिन्दुस्तान के सुनहरे कल के
मंदिरों और अपने सभी पूजा घरों से निकल के
आ गए हैं आज भगवान अपना रूप बदल के
कहीं पहनी खाकी, कहीं पहने हैं वस्त्र सफेद
कर रहे वो अपना काम बहुत संभल संभल के



मन को समझाना सीख लिया
खुद को मनाना सीख लिया
कम में काम चलाना सीख लिया
दूसरों के साथ बाँटना सीख लिया
इंसान हैं इसके पक्के सबूत हो गए
हम पहले से ज्यादा मज़बूत हो गए

घर में देर तक रहना सीख लिया
सनना और हमने कहना सीख लिया
बिना आंसू हमने बहना सीख लिया
हालातों को हमने सहना सीख लिया
शख्सियत बदली ठोस वजूद हो गए
हम पहले से ज्यादा मज़बूत हो गए

चाँद, तारों से बातें करना सीख लिया
तितलियों को हमने पकड़ना सीख लिया
फूल, पौधों से बातें करना सीख लिया
तन्हाई से मुलाक़ातें करना सीख लिया
मूल से हम निकल कर खुद सूद हो गए
हम पहले से ज्यादा मज़बूत हो गए

हमने हकीकत को समझना सीख लिया
हमने ज़िन्दगी से सुलझना सीख लिया
हमने दुश्मन से निबटना सीख लिया
हमने खद से उलझना सीख लिया
अंधेरों से न डरने वाले हम भूत हो गए
हम पहले से ज्यादा मज़बूत हो गए

सीखा बहत कुछ ज़िन्दगी के इस पढ़ाव में
हम अकेले थे यहाँ और वो अकेले गाँव में
धूप में झुलस रहे थे सब कोई नहीं छाँव में
बाज़ी मार ली हमने ज़िन्दगी के इस दाँव में
मार देंगे दुश्मन को हम यमदूत हो गए
हम पहले से ज्यादा मज़बूत हो गए



चल लिए बहुत क्यों न थोड़ा आराम करें
दूसरों की परेशानियों का समाधान करें

तकलीफ़े बहुत हैं सबके साथ मालूम है
दूसरों की तकलीफ़ों के लिए काम करें

ज़र्सी नहीं की पेट भरा ही जाए आज
गरीबों के भी पेट भरने का इंतज़ाम करें

रहें घर में बनाएँ रखें हम सामाजिक दूरी
मिलकर हम कोरोना का काम तमाम करें

जो हो रहा है वो उसकी मर्जी से हो रहा
कुछ समय अपना हम खुदा के नाम करें

हो भला सबका, सब रहें स्वस्थ, सुरक्षित
हाथ जोड़कर ये प्रार्थना सुबह शाम करें

जान पर खेलकर जो बचा रहे हैं हमारी जान
करते नमन उनको हम चलो सलाम करें

चल लिए बहुत क्यों न थोड़ा आराम करें
दूसरों की परेशानियों का समाधान करें

तकलीफ़े बहुत हैं सबके साथ मालूम है
दूसरों की तकलीफ़ों के लिए काम करें



डटकर करते सामना, हौसले कहाँ झुकते हैं
हम वो हैं जिनके सपने कभी नहीं स्कते हैं

आसमान कम जब हम अपनी पर आ जाएँ
हम वो हैं जो पंख से नहीं हौसलों से उड़ते हैं

इतिहास लिखे जाते हैं जीतने के बाद जंग
हम वो हैं खुद अपना आज, कल लिखते हैं

इंतज़ार कभी कभी लम्बा पर समय आता है
हम वो हैं जो वक्त की हर बात समझते हैं

सपनों का क्या, सपने कोई भी देख सकता
हम वो हैं जो हिम्मत से सपने सच करते हैं

उम्मीद का दामन हम कभी भी छोड़ते नहीं
हम वो हैं जो आशाओं के दीप बन जलते हैं

नहीं फ्रक्क कोई क्या कहता और समझता
हम वो हैं जो दूसरों की नहीं अपनी सुनते हैं

रास्ते बहत हैं कहाँ जाएँ पता नहीं चलता
हम वो हैं जो मंज़िल अपनी खुद चुनते हैं

डटकर करते सामना, हौसले कहाँ झुकते हैं
हम वो हैं जिनके सपने कभी नहीं स्कते हैं

आसमान कम जब हम अपनी पर आ जाएँ
हम वो हैं जो पंख से नहीं हौसलों से उड़ते हैं

दुख खत्म नहीं होता कभी दुख चलता है
पर ज़िन्दगी का पर्दा रोज़ उठता, गिरता है
देखना चाहते हम वो जो हमें सकूँ देता है
क्यों भूलते सूरज रोज़ छिपता, निकलता है
ज़िन्दगी में हमारी स्कने जैसा तो कुछ नहीं
गोल गोल पहिया है जो निकलता, चलता है
यादें भी अच्छी दोस्त बन सकती हैं हमारी
दिल तो दिल है कभी गिरता, संभलता है
कहानी बढ़ती तो सोचते क्या खोया, पाया
अंदर हमारे मनुष्य नया नया बनता, बढ़ता है
मुलाकात हमारी खुद से, खात्मा नफरत का
सबक बदलते आत्मीयता लिखता, पढ़ता है
जिसे पहुँचना होता है गाँव वो सोचता नहीं
छाँव की चाह नहीं धूप में स्कता, चलता है
क्यों हो ज़िन्दगी ग़मगीन, छालों का क़ालीन
गाँव हमेशा हमारे दिलों में बसता, पलता है
दुख खत्म नहीं होता कभी दुख चलता है
पर ज़िन्दगी का पर्दा रोज़ उठता, गिरता है
देखना चाहते हम वो जो हमें सकूँ देता है
क्यों भूलते सूरज रोज़ छिपता, निकलता है

हालातों की वजह से निकलना छोड़ दिया
ये मत सोचना तुम कि मैंने चलना छोड़ दिया

तन्हा हो जाते हैं रिश्ते जो न हों मलाक्रातें
मैंने उनसे, उन्होंने मुझसे मिलना छोड़ दिया

हौसलों के दीयों में उम्मीदें रोशन करता हूँ
मैंने आजकल दिलों को जलाना छोड़ दिया

मैं आज भी अकेला नहीं दिनिया की भीड़ में
गलत सोचते लोग कि मैंने जमाना छोड़ दिया

हिचकियों से बारें, ख्वाबों में होती मलाक्रातें
याद करता हूँ, बस मैंने याद आना छोड़ दिया

अभिवादन में कोई कर्मी नहीं, दिल से करूँगा
नमस्कार करूँगा, बस हाथ मिलाना छोड़ दिया

मैं भी मँह ढक कर आऊँगा और तुम भी आना
पहचान वो ही, मैंने चेहरा दिखाना छोड़ दिया

हालातों की वजह से निकलना छोड़ दिया
ये मत सोचना तुम कि मैंने चलना छोड़ दिया

तन्हा हो जाते हैं रिश्ते जो न हों मलाक्रातें
मैंने उनसे, उन्होंने मुझसे मिलना छोड़ दिया



ये ही वो समय है

जब हम घर में हैं, किताबें पढ़ रहे
सबकी सुन रहे और अपनी कह रहे
आराम कर रहे और व्यायाम कर रहे
छोटे या बड़े सारे खुद काम कर रहे
ज़िन्दगी जीने का तरीका बदल लिया
सलीका बदल लिया.....

ये वो समय है जब हर कोई
समय के साथ चल लिया.....

कोई कर रहा प्रार्थना, कोई लगा रहा ध्यान
कोई खुद से करा रहा खुद की पहचान
किसी ने परछाई के साथ चलना सीख लिया
किसी ने बिना किसी के जीना सीख लिया
किसी की बदली दिनचर्या
किसी ने खुद को बदल लिया
ये ही वो समय है जब हर कोई
समय के साथ चल लिया.....

स्वाद बदल गए, संवाद बदल गए
प्रकृति के भी आज हालात बदल गए
बदली है सोच ख्यालात बदल गए
देख कर ये सब हमारे ज़ज़्बात बदल गए
मिलते नहीं वो आजकल वहाँ
जाने कितनों ने अपना पता बदल लिया
ये ही वो समय है जब हर कोई
समय के साथ चल लिया.....

सिर्फ अपनी नहीं दूसरों की भी फ़िक्र
बातों में होने लगा अनजान लोगों का ज़िक्र
खुद खाने से पहले दूसरे के खाने का इंतज़ाम
अपने मंदिर को छोड़ सेवा में लग गए भगवान
बचा वो ही यहाँ जो संभल लिया
ये ही वो समय है जब हर कोई
समय के साथ चल लिया.....

मशहूर होने आए थे बदनाम हो गए
आज अपने शहर में गुमनाम हो गए

घूमना होगा भी तो नक्काब लगाकर
पहचानना मुश्किल, बेनाम हो गए

चुकाना था क़र्ज़ा हम सबको घर का
समय माँगा उसने तो हम दाम हो गए

दिन गुजरने का पता लगना बंद हुआ
कब हुई सुबह, कब हम शाम हो गए

चौकसी ने चौकीदार बना दिया हमें
घर घर हिन्दुस्तान के मचान हो गए

कछु न कुछु तो करना है रहने के लिए
किए जो न थे आज सब काम हो गए

फ्रक्क ऊँच नीच, जात पात का मिट गया
नहीं रहा यहाँ खास कोई सब आम हो गए

खत्म कर दिया करते थे मयखाने कभी
खत्म आज उनके भी देखो जाम हो गए



ज़िन्दगी हो गई जैसे लाल, पीली, बत्तियाँ
कुछ दिन और बढ़ गई हैं गर्मी की छुट्टियाँ

ज़िन्दगी के लिए तो रंग बहुत अच्छे होते हैं
हौसलों को रख बुलन्द करो थोड़ी मस्तियाँ

ज़िन्दगी को तुम थामों ज़रा है रंग जो लाल
पीले में कर सकते थोड़ी तुम चहलक्रदमियाँ

ज़िन्दगी अभी नहीं गुलज़ार जो रंग हुआ हरा
करने मत लग जाना अब तुम रोशन बस्तियाँ

ज़िन्दगी का बँटवारा देखो रंगों से हुआ आज
जात पात, अमीर गरीब की ख़त्म पंक्तियाँ

ज़िन्दगी है साहब रुक्ती कहाँ है चलती है
लम्हे जिओ करो दिल में यादों की भर्तियाँ

ज़िन्दगी लड़ी ज़िन्दगी से, ज़िन्दगी के लिए
जल्द बदलने को हैं अ़खबारों की सुर्खियाँ

ज़िन्दगी के लिए अपनों को भी करना याद
कुछ दिन और देंगी साथ हमारा हिचकियाँ

ज़िन्दगी की कोशिश, बदल जाएँ रंग जल्द
निकालनी है तूफानों से हमें अपनी कश्तियाँ

ज़िन्दगी हो गई जैसे लाल, पीली, बत्तियाँ
कुछ दिन और बढ़ गई हैं गर्मी की छुट्टियाँ

ज़िन्दगी के लिए तो रंग बहुत अच्छे होते हैं
हौसलों को रख बुलन्द करो थोड़ी मस्तियाँ

मिट जाएँ सब ग़ाम, तकलीफ़ों बस ये हसरत है
आज फिर से हमें एक भूतनाथ की ज़स्त है
हम मिल नहीं सकते, बहार निकल नहीं सकते
ग़ज़ब भूतनाथ का जादू ग़ज़ब उनकी महारथ है
कहाँ नहीं है परेशानी, आँखों का सूखा पानी
हर कोई चाहता खुशी बस ये ही हक्कीकत है
रुक रुक के चला नहीं जाता जिन्दगी में अब
कर दे सब ठीक भूतनाथ को आती कसरत है
मचा है घमासान, चारों तरफ है बस कोहराम
घुटन हो रही अब हटनी चाहिए जो धुएँ की परत है
बँधे हैं हाथ इंसान के हुआ है वो बहुत मजबूर
भूतनाथ कुछ भी कर सकता, नहीं कोई हद है
बैठे हैं उसके सहारे सारे आज ताक़तें देखो मुँह
आस्थाओं में विश्वास, कभी नहीं होता ग़लत है
उसी को किया जाता है याद हो जिस पर विश्वास
हमारी खुशहाली ही तो बस भूतनाथ का मक्कसद है
मिट जाएँ सब ग़ाम, तकलीफ़ों बस ये हसरत है
आज फिर से हमें एक भूतनाथ की ज़स्त है



आ जाए हिचकी आज उन्हें याद उन्हें शिद्धत से कीजिये
ज़िन्दगी खूबसूरत है, हर काम यहाँ मोहब्बत से कीजिये
थी तमन्ना बहुत तो कर लो पूरी सब आज मिला है समय
सोच सोच कर एक एक काम ज़रा आप फ़ुरसत से कीजिये
खद को बचाने से ही सब को बचा सकते हैं हम यहाँ पर
रिंश्टे निभाएँ बड़े प्यार से अब मुलाक़ातें नज़ाकत से कीजिये
न कहने की आदत डालनी पड़ेगी अब हमें बदलना होगा
नहीं मानता कोई तो न माने वो काम कुछ ब़गावत से कीजिये
बुरा लगेगा लोगों को रवैया आपका तो लग जाने दो बस
बनाने ज़िन्दगी को खुशनुमा आप ये भी हिमाक़त से कीजिये
सोचा न था कि ऐसा भी होगा हम तो बस अपनी धन में थे
सुनिए आवाज़ प्रकृति की, बर्ताव अब हिमायत से कीजिये
कमाया बहुत, जोड़ जोड़ कर रखा, काम आया नहीं कुछ
कमाई भी सोच सोच कर और खर्चा भी किफ़ायत से कीजिये
आ जाए हिचकी आज उन्हें याद उन्हें शिद्धत से कीजिये
ज़िन्दगी खूबसूरत है, हर काम यहाँ मोहब्बत से कीजिये
थी तमन्ना बहुत तो कर लो पूरी सब आज मिला है समय
सोच सोच कर एक एक काम ज़रा आप फ़ुरसत से कीजिये



डरना, छपना नहीं अब और हमें अब घर से निकलना है
बदलने को ज़िन्दगी अब हमें अपनी आदत को बदलना है

हुनर की कमी नहीं हमारे यहाँ बतानी ये सबको बात
स्वदेशी को है बढ़ाना और हमें उसकी आवाज़ बनना है

किसे पता था आएँगे ये दिन करेंगे धिरा हुआ महसूस
रास्ता कठिन है पर हमें इससे आत्मनिर्भर होकर गुजरना है

क्या नहीं है यहाँ जो किया जा सकता उपयोग नहीं आज
यहीं का लाकर, खाकर, पहनकर अब हमें सँवरना है

जब हम बोलेंगे साथ में तो दुनिया को सुनना होगा
स्वदेशी को घर घर लाना मिट्टी की खुशबू से हर घर भरना है

चलने लगेंगे कारोबार होगी घर घर में खुशियों की भरमार
महकाने को फुलवारी हमें अपने बगीचे का फूल बनना है

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, आत्म चिंतन से आत्मनिर्भरता का सफर
फिर मुस्कुराए हिन्दुस्तान बस अब हमारी ये ही तमन्ना है

डरना, छपना नहीं अब और हमें अब घर से निकलना है
बदलने को ज़िन्दगी अब हमें अपनी आदत को बदलना है

हुनर की कमी नहीं हमारे यहाँ बतानी ये सबको बात
स्वदेशी को है बढ़ाना और हमें उसकी आवाज़ बनना है



घटनों पर आ गया इंसान देखो आज फिर वो झुका है
स्के हैं जहाज़, स्की हैं कारें, स्के कदम, इंसान स्का है
चाह पाने की नहीं, ले जाने की नहीं, बस निकल जाने की है
मिला है सबक नया उसको उसने बहुत कुछ आज सीखा है
पास किसी के जा नहीं सकते, कोई पास आता नहीं हमारे
याद करते हैं, हिचकियों से खटखटाते, दिल से दिल जुड़ा है
न कोई राज रहा, न कोई नाराज़ रहा, जो रहा बस वो आज रहा
कोई नहीं है लड़ने को भी, इन्सान अकेला आज खुद से लड़ा है
स्वास्थ्य उपहार, संतुष्टि संपत्ति, मुस्कराहट की बड़ी ताक़त
वफ़ादारी निभाने घर घर में दुश्मन के आगे इंसान खड़ा है
क्या थी हद उस मंज़िल की जहाँ पहुँचना चाहता था इंसान
न रास्ता है और न है कोई मंज़िल, दोनों से आज वो बिछड़ा है
अभिमान ने बना दिया था शैतान उसे मचा रखी थी तबाही
अपनी नम्रता से बना फ़रिश्ता, इंसान का वजूद दुश्मन से तगड़ा है
दिल पर एतबार करने, समझने, आँखों को पढ़ने की आदत डाल ली
पहचानना चेहरों को हो गया मुश्किल, हर चेहरे पर नक़्काब चढ़ा है
स्वयं के दर्द को भूल गया, दूसरों के दर्द को अपना लिया है आज
दूर दूर रहकर भी साथ साथ, दुश्मन को हराने का ये ही तरीक़ा है
घटनों पर आ गया इंसान देखो आज फिर वो झुका है
स्के हैं जहाज़, स्की हैं कारें, स्के कदम, इंसान स्का है

लगाना न अंदाज़ा तू मेरे हौसलों का
ये कहीं ज्यादा हैं तेरे सब अंदाज़ों से

चला हूँ मैं पथरीली राहों पर अब तक
निकला हूँ मैं मुश्किल भरे दरवाज़ों से

हवाओं में रोशन चिराग को कर रखा है
डरता नहीं हूँ मैं तूफ़ानों की आवाज़ों से

करता हूँ काम अपना बहुत लग्न से मैं
उठ चूका ऊपर हार जीत के रिवाजों से

जीतने को तो जीत सकता हूँ ये ज़ँहा मैं
जीता है दिलों को मैंने अपने प्रयासों से

स्कता नहीं मैं चलता चला जा रहा हूँ
जानता हूँ मंज़िल नहीं मिलती क़्रायासों से

लगाना न अंदाज़ा तू मेरे हौसलों का
ये कहीं ज्यादा हैं तेरे सब अंदाज़ों से

चला हूँ मैं पथरीली राहों पर अब तक
निकला हूँ मैं मुश्किल भरे दरवाज़ों से

कब तक थमता, सागर को तो छलकना था
सँभालने सागर को ग़ज़ब वो सैलाब उमड़ा

हमने समझा भूखा है, प्यासा था वो शायद
बुझाने को प्यास अपनी वो बेहिसाब उमड़ा

उड़ा दी धज्जियाँ उसने क्रायदे, क्रानून की
हक्रीकत में आज बदलता वो ख्वाब उमड़ा

अर्थव्यवस्था के आधार स्तंभ हैं ये सब तो
देने कंधा अर्थशास्त्रियों का वो दबाव उमड़ा

थक चुके थे, टूट चूके थे घर में पड़े पड़े सब
सवाल थे बहुत उनसे तो देने वो जबाब उमड़ा

कभी पिए आँसू उसने कभी बेस्वाद पानी पिया
ज़िन्दगी का नशा उतारने लेने वो शराब उमड़ा

कब तक थमता, सागर को तो छलकना था
सँभालने सागर को ग़ज़ब वो सैलाब उमड़ा

हमने समझा भूखा है, प्यासा था वो शायद
बुझाने को प्यास अपनी वो बेहिसाब उमड़ा



ये लम्बे, उजड़े उजड़े बाल
कैसे कटेंगे बड़ा ये सवाल
तेल से मस्त चंपी करवाए
बहुत दिन हो गए....।

आज मन नहीं उठने का
मन नहीं ऑफिस जाने का
न जाने का बहाना बनाए
बहुत दिन हो गए....।

काले चमड़े का जूता
और वो फॉर्मल सूट
जूतों को थोड़ा चमकाए
बहुत दिन हो गए....।

वो सुबह लेट हो जाना
वो जल्दी जल्दी नहाना
भागते भागते नाश्ता खाए
बहुत दिन हो गए....।

वो लाल, हरी, पीली बत्तियाँ,
वो गुस्सा, झुँझलाहट
बरसात में वाइपर चलाए
बहुत दिन हो गए....।

कितनी दूर चलेगी ये
सोचते सोचते कटता रस्ता
कार में तेल डलवाए
बहुत दिन हो गए....।

ये कार क्यों चलती नहीं
जिन्दगी हमारी बदलती नहीं
बिना बात के हार्न बजाए
बहुत दिन हो गए....।

काम का बनना, खराब होना
पैसे, पैसे और पैसों का रोना
बिना बात के चिल्लाए
बहुत दिन हो गए....।

वो कहीं के लिए निकलना
रास्ता देखना, समझना
Goggle Maps को चलाए
बहुत दिन हो गए....।

वो फ़िल्म आने का इंतज़ार
देखने जाता पूरा परिवार
इंटरवल में पॉपकॉर्न खाए
बहुत दिन हो गए....।

वो बाहर के खाने का स्वाद
जाएँ कि न जाएँ होता विवाद
गोल-गप्पे, टिक्की खाए
बहुत दिन हो गए....।

क्या सोमवार, क्या शनिवार
दिन सारे हो गए रविवार
थक के चूर weekend मनाए
बहुत दिन हो गए....।

वो चीज़ें महँगी और सस्ती
होती थी शॉपिंग मालों में मस्ती
बिना काम के भी घंटों बिताए
बहुत दिन हो गए....।

भगवान को करते रोज़ याद
मिला नहीं मंदिर से प्रशाद
मंदिर का घंटा बजाए
बहुत दिन हो गए....।

परिवारिक मित्रों से मुलाक़ातें
रात भर ख़त्म न होने वाली बातें
साथ में अच्छा समय बिताए
बहुत दिन हो गए....।

कहाँ हो, कब आओगे
क्या बना लूँ, क्या खाओगे
गुस्से से दांतों को दबाए
बहुत दिन हो गए....।

दिन भर का थका हारा
समझता था ख़द को बेचारा
घर पहुँचकर मुस्कराए
बहुत दिन हो गए....।

वो बनता दिन भर प्रोग्राम
दोस्तों के साथ गुलज़ार शाम
वो जाम से जाम टकराए
बहुत दिन हो गए....।

हाथ नहीं मिलाना अब हमें और गले भी नहीं मिलना है
मिलानी है बस हमें नज़र, नज़र बचा के नहीं निकलना है
परेशान वो भी है और हम भी हैं, सब यहाँ परेशान आज
किसी को गिरने नहीं देना है हमें, और खुद भी संभलना है
अंधेरे हैं बहुत गहरे, पर रोशनी करने वाले भी तो चाहिए यहाँ
करने को रोशनी जलना पड़े अगर, तो हमें खुद जलना है
सोचते थे सड़क शहर की ओर जाती, वापस आती नहीं है
गाँव देता आवाज़ रोटी हाथ में लिए, उसकी गोद में पलना है
तू मेरा सहारा है, मैं तेरा, हम सब एक दूजे के सहारे हैं अब
अकेले न चला जाएगा, तुम्हें भी चलना है मुझे भी चलना है
अब वो बात तो न होगी, बात तो होगी कोई बात बात में
ढँकना है मुँह को हमें ज़िन्दगी के लिए तरीक़ा बदलना है
हाथ नहीं मिलाना अब हमें और गले भी नहीं मिलना है
मिलानी है बस हमें नज़र, नज़र बचा के नहीं निकलना है



भगवान है हर जगह आज यहाँ
दर्शन तुझे सुबह शाम हो जाए

किसी गरीब को दे आस तू अब
उसका भी तेरा भी काम हो जाए

चल रहा है वो पैदल घर की ओर
कर कुछ सफ़र आसान हो जाए

भरे जो पेट किसी भूखे का आज
प्रभू दर्शन जैसे राम राम हो जाए

जिन्दगी स्क सी गई सबकी आज
प्रयासों से तेरे खुश अवाम हो जाए

गर्मी है तो पसीने में नहा के देख तू
ऐसी सेवा जैसे गंगा स्नान हो जाए

भगवान खुद लगे हैं काम पर आज
चाहते खुशहाल हिन्दुस्तान हो जाए

पतित सेवा भी प्रभु सेवा से कम नहीं
तेरे हाथों से ये भी अब काम हो जाए

इंसानियत को बचाना ज़रूरी है आज
इंसान का बस आज इंसान हो जाए

जाते थे उसके दर आज वो आ रहा
मिलेगा सब उसे ये इत्मिनान हो जाए

मिलकर लड़ेंगे तो जीत जाएँगे हम
दुश्मन का खत्म अब गुमान हो जाए

भगवान है हर जगह आज यहाँ
दर्शन तुझे सुबह शाम हो जाए

किसी गरीब को दे आस तू अब
उसका भी तेरा भी काम हो जाए

सीधे चलना है लेकर अपने अपने चरण
प्रथम से पंचम चरण, सावधानी करें ग्रहण
माना नहीं पहले इसे कुछ, होगा नहीं हमें
गर्मी में करेगा नहीं वार कर लिया धारण
ग़स्सा, ग़ज़ब ग़स्सा इस बंदी पर किया
ज़िन्दगी को ब़र्बाद करने का बना कारण
सौदा, समझौता करने लगे इसके साथ
ये बचा, वो बचा, दे दे कर हम उदाहरण
अवसाद की स्थिति हुई गंभीर परिस्थिति
सोचा न था होगा ये न करने पर अनुसरण
अब जीना होगा साथ इसके ही हमें यहाँ
बचाव ही है इलाज बहुत छोटा है ये कण
किसने रोका है हमें, हमें स्कना नहीं अब
मस्तिष्क कर पक्का बढ़ा लो अपने चरण
सीधे चलना है लेकर अपने अपने चरण
प्रथम से पंचम चरण, सावधानी करें ग्रहण



कल, आज और कल

कल समय पूँजी था और समय नहीं था, जिन्दगी बिना समय अधूरी
आज जिन्दगी पूँजी हो गई, कल के लिए ये पूँजी बचानी है ज़रूरी

कल पानी को बचाने की थी जद्वाजहद, करते थे क्या क्या बचाने के लिए
आज हाथ धोना ज़रूरी, कल भी रहेगा ज़रूरी ये जिन्दगी बचाने के लिए

कल आदत शराब की ख़राब कहते थे लोग फिर भी थी पी जाती
आज उसी से साफ़ करते हाथ, और कल के लिए बात ये सिखाई जाती

कल समाज, रिश्ते, दोस्त सबसे मिलना जुलना था बहुत ज़रूरी
आज बना कर रखते दूरी और कल के लिए भी रखनी होगी सामाजिक दूरी

कल मोबाईल की लत थी बुरी, बच्चों को दूर रखने की देते थे सलाह
आज सारे काम मोबाईल से सुनहरे कल के लिए बच्चे पकड़ रहे राह

कल सेहत, मौज-मस्ती के लिए बाहर घुमने का रहता था जनून
आज घर में रहना ज़रूरी हो गया, कल इस से होगा जिन्दगी में सुकून

कल मेहमान को भगवान का दर्जा, अब शायद भागवान ये नहीं चाहते
आज हम किसी के घर नहीं जाते, बेहतर कल के लिए किसी को नहीं बुलाते

कल गले मिलने, हाथ मिलाना, प्यार और शिष्टाचार हुआ था करता
आज दूर दूर हैं सब और बेहतर कल के लिए इस सब से हर कोई बचता

कल निकल चुका है, आज सामने हमारे और कल के लिए प्रयासरत
आज बदले हैं हम, बेहतर कल के लिए बदली हैं आदतें और हसरत

कल समय पूँजी था और समय नहीं था, जिन्दगी बिना समय अधूरी
आज जिन्दगी पूँजी हो गई, कल के लिए ये पूँजी बचानी है ज़रूरी

सही जाती नहीं अब तेरी दुश्वारियाँ मुझसे बिलकुल यहाँ
ज़िन्दगी मैं तेरी नौकरी से आज रिझाइन करना चाहता हूँ

बहुत छोटा सा कहने को तो वायरस पर मचा रहा तबाही
२०२० तुझे मैं डिलीट कर, दुबारा डिज़ाइन करना चाहता हूँ

कोई बंद है घर में तो कोई चल रहा, मंज़िल ज़िन्दगी सबकी
खुशी नदारद चेहरे से, मैं हर चेहरे को शाइन करना चाहता हूँ

ग़लतियों से सीखा बहुत पर पूरी तरह से सीख नहीं पाया
पढ़ने को पाठ नया मैं तजुर्बे की क्लॉस ज्वाइन करना चाहता हूँ

तेरे मेरे बीच में ग़लतफ़हमियों ने घर अपना बना लिया है
हटा वो घर ज़िन्दगी से रिश्ते परफ़ेक्ट, फ़ाइन करना चाहता हूँ

मनाही हो गई हाथ मिलाने में, गले मिले भी ज़माना हुआ
हटा कर दूरी रिश्तों में आज, ख़त्म हर लाइन करना चाहता हूँ

अंधेरों ने तो पहरेदारी का ज़िम्मा ले लिया है, जाता नहीं वो
जला को खुद को मैं, दिल में रोशनी डिवाइन करना चाहता हूँ

सही जाती नहीं अब तेरी दुश्वारियाँ मुझसे बिलकुल यहाँ
ज़िन्दगी मैं तेरी नौकरी से आज रिझाइन करना चाहता हूँ

सफर उम्र का चल रहा बस
और मैं फ़रमाईशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

लोग जा रहे और आ रहे हैं
और मैं गुज़ारिशें लेकर वही खड़ा हूँ ..!!

कोई सनता नहीं फ़रियाद किसी की
और मैं सिफारिशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

दुश्मन मेरा निकल गया बहुत आगे..!!
और मैं रंजिशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

कामयाब हो गयी हर चाल उनकी
और मैं साज़िशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

जलाने वाले तो जला चुके बस्तियाँ
और मैं माचिसें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

छुट चका है हाथ आज दोस्तों का
और मैं नाव, बारिशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

जानता हूँ कि कोई नहीं मनायेगा मुझे
और मैं आज़माइशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

मेला लगा लिया सबने अपने हिसाब से
और मैं नुमाइशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

चला वो शहर छोड़कर गाँव की ओर
और मैं रिहाइशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

सफर उम्र का चल रहा बस
और मैं फ़रमाईशें लेकर वही खड़ा हूँ..!!

लोग जा रहे और आ रहे हैं
और मैं गुज़ारिशें लेकर वही खड़ा हूँ ..!!

घर वो साथ है जो कभी छूटता नहीं
घर वो भरोसा है जो कभी टूटता नहीं
समय बिताया तो पता चला हमें ये
करता बातें पर कभी कुछ पूछता नहीं
देखा हमने रुठते इंसानों, हवाओं को
वो घर ही जो हमसे कभी रुठता नहीं
हम तो टूट जाते हैं हालातों की मार से
घर ही है जो किसी मार से टूटता नहीं
आते आँधी, तूफान सह जाता सब घर
देने चोट उसे कोई यहाँ पर चूकता नहीं
हमें लेने की चाह, रखता वो देने की चाह
समंदर दरियादिली का कभी सूखता नहीं
सह लेता सब कुछ हमारे लिए हमारा घर
कैसा भी मौसम, कभी झुलसता, भीगता नहीं
कभी सोच भी न पाए थे ये सोच, सोच कर
सोचते थे बस ये कि घर कुछ सोचता नहीं
घर वो साथ है जो कभी छूटता नहीं
घर वो भरोसा है जो कभी टूटता नहीं
समय बिताया तो पता चला हमें ये
करता बातें पर कभी कुछ पूछता नहीं



हम सब थे निर्भर उस पर वो अकेला आत्मनिर्भर निकला
बनाई थी जो सड़क उसने हमारे लिए कभी उस पर वो खुद चला

हाथों से बनाया था उसने कारों को, बसों को, रेलगाड़ी के डिब्बों को
पर जब उसे ज़स्त फ़ट पड़ी तो उसे यहाँ कुछ भी क्यों नहीं मिला

राह तकती हैं मशीनें, औज़ार, कारखाने सब के सब उसका
लौट कर आने का क्या पता अब उसे जो वापस गाँव निकला

दो वक्त की रोटी के लिए गाँव छोड़ दिया जिसने कभी
आज उसी रोटी की वजह से घर वापसी का हुआ यहाँ सिलसिला

बेबस है वो अब बस भी करो जो बस भी नहीं तम्हारे बस में
झूठे दिलासे, भरोसा, राजनीति के आकाओं ने उसे आज फिर छला

बीमारी का क्या है साहब जब आती सबसे पहले उसे ही मारती
हम रहे घरों में बचकर वो बेखौफ़ सड़कों पर ग़ज़ब है हौसला

रेत, इंट, सीमेंट, बजरी से उसने मकान बनाया जो बना घर हमारा
खुले आसमान के नीचे नंगे पैर वो जिसने दिया हमें हमारा घोसला

चाहता क्या था बस दो वक्त की रोटी हम वो भी न दे पाए उसे
सँभाला जिसने जाने कितनों का उनसे वो एक मज़दूर न संभला

हम सब थे निर्भर उस पर वो अकेला आत्मनिर्भर निकला
बनाई थी जो सड़क उसने हमारे लिए कभी उस पर वो खुद चला



असमंजस में हूँ

कर्म धर्म है या धर्म कर्म है बड़े असमंजस में हूँ
छोड़ दूँ या करूँ मैं ये काम बड़े असमंजस में हूँ

धर्म की सोचता तो कर्म छूट जाता है क्या करूँ
पेट भरूँ रहूँ भूखा मैं सोच बड़े असमंजस में हूँ

किस के साथ खड़ा रहूँ, रहूँ मैं किसके खिलाफ
साथ दूँ या छोड़ दूँ मैं सोच बड़े असमंजस में हूँ

बता दूँ सबको ये बात या छपा लूँ सबसे ये बात
मचाऊँ हल्ला, रहूँ चूप मैं सोच बड़े असमंजस में हूँ

सोचूँ मैं देश की, समाज की या बस अपनी सोचूँ
सब में रहूँ या मैं मैं रहूँ ये सोच बड़े असमंजस में हूँ

कर के कुछ काम दे दूँ सबको कुछ या नहीं दूँ मैं
नज़रों में रहूँ, खबरों में, मैं सोच बड़े असमंजस में हूँ

कर्म धर्म है या धर्म कर्म है बड़े असमंजस में हूँ
छोड़ दूँ या करूँ मैं ये काम बड़े असमंजस में हूँ

धर्म की सोचता तो कर्म छूट जाता है क्या करूँ
पेट भरूँ रहूँ भूखा मैं सोच बड़े असमंजस में हूँ



ज़िन्दगी के कितने हैं पहलू हमें बतलाए कोई
कैसे निकलना है हमें यहाँ से सिखलाए कोई
अंधेरों ने कर लिया हमें अपने कब्जे में आज
उम्मीदों का सूरज हमें भी अब दिखलाए कोई
घूम रहा इंसान ओढ़ कर नक्राब तरह तरह के
पढ़ा जाता है कैसे आँखों को समझाए कोई
परवाने की चाह होती जल जाने की शमा पर
करना चाहता रोशनी में, हमें भी जलाए कोई
हाथ नहीं पकड़ना है पर साथ नहीं छोड़ना है
अकेले जी नहीं सकते दिल तो मिलाए कोई
मज़दूर निकल पड़ा होकर आत्मनिर्भर फिर से
सोचता वो इंसानियत का रिश्ता निभाए कोई
सुना फ़रिश्ते आते हैं जब जब आता ज़लज़ला
इंतज़ार है उसका मुसीबत से हमें बचाए कोई
पूजा करूँ, दआ करूँ, जो बस में सब करूँ मैं
बचाने इंसानियत को ये बीड़ा भी उठाए कोई
ज़िन्दगी के कितने हैं पहलू हमें बतलाए कोई
कैसे निकलना है हमें यहाँ से सिखलाए कोई



निकल पड़ा है जाने किस राह पर इंसान
आना मुश्किल उसकी वापसी खतरे में है
खामोश है वो, खुशियों को लगा है ग्रहण
शहर में रोज़ एक एक आदमी खतरे में हैं
अब भी नहीं सुधरे हम तो देर हो जाएगी
गंगा होने को लुप्त यहाँ हर नदी खतरे में है
इलाज नहीं बीमारी पर हो रही सियासत
छोटे छोटे बच्चों की ज़िन्दगी खतरे में है
हैं जो रखवाले खेल गए जान पर आज
हालात बोलते तुम्हारी कुर्सी खतरे में है
जल जाएगा सब कछ तबाही राह तकती
सर्दी तो आती नहीं यहाँ गर्मी खतरे में है
पुकारते हैं देश पर जान निसार करने वाले
बचा लो इसे तुम्हारी सरज़मी खतरे में है
निकल पड़ा है जाने किस राह पर इंसान
आना मुश्किल उसकी वापसी खतरे में है
खामोश है वो, खुशियों को लगा है ग्रहण
शहर में रोज़ एक एक आदमी खतरे में हैं



बचपन भूला बैठे, रंग बिरंगे गुब्बारे भूला बैठे
अपनो से नाराज़ हम, बड़ा सा मुँह फूला बैठे
नोंक झोंक ज़िन्दगी में माना ज़स्करी है बहुत
पर हरकतों से अपनी हम दुनिया हिला बैठे
बात, बात में बात निकालने लगे हैं हम आज
खुशमिज्जाज ज़िन्दगी, हम दे क्या सिला बैठे
कोई आए मानने तो मानते नहीं बस राह तकते
अकेले, अकेले हैं बस हाथों में लिए गिला बैठे
तूफानों से दोस्ती सी हो गई रोज़ आते रहते
खत्म न होने वाला लेकर हम आज मसला बैठे
खुद तो कछ कहने की हिम्मत थी नहीं हमारी
कठपुतलियों को सामने उनके हम झुला बैठे
उम्रदराज़ होना लाज़मी है पर अरमान कम न हों
खूसट सी हो गई ज़िन्दगी, खुशी सब भूला बैठे
बचपन भूला बैठे, रंग बिरंगे गुब्बारे भूला बैठे
अपनो से नाराज़ हम, बड़ा सा मुँह फूला बैठे
नोंक झोंक ज़िन्दगी में माना ज़स्करी है बहुत
पर हरकतों से अपनी हम दुनिया हिला बैठे



हम बनाते नहीं बिलकुल ऐसी महफिलों में न जाने के बहाने
जब पता हो कि वहाँ आएँगे, मिलेंगे हमें कुछ दोस्त पुराने
बात बात में बातों का दौर चला जब दूर तलक गया हमेशा
कुछ हमने कही और कुछ हमने सुनी याद आ गये अफ़साने
कोई कह रहा था कछ तो कोई कुछ हो रहा था बहुत कुछ
दोस्तों की निगाहें थीं कहीं और, और कहीं थे उनके निशाने
मिले सब एक जगह तो जैसे ताज़ा होने लगी हर एक याद
घूम लिये हम हम हर गली जहाँ जाए हुये हमें हो गये जमाने
बला लो मझे आज या फिर मैं बुलाता हूँ तुम सबको आज
बिना हमारे तुम्हारे सुनसान हो गए हैं हमारे सब यहाँ ठिकाने
हिचकियों का क्या है ये तुम्हें भी आती और मुझे भी आती
मिलना है मुझे फिर एक बार बनाने को यादों के शामियाने
हम बनाते नहीं बिलकुल ऐसी महफिलों में न जाने के बहाने
जब पता हो कि वहाँ आएँगे, मिलेंगे हमें कुछ दोस्त पुराने
बात बात में बातों का दौर चला जब दूर तलक गया हमेशा
कुछ हमने कही और कुछ हमने सुनी याद आ गये अफ़साने

ज़िन्दगी कहाँ स्वकृती
ज़िन्दगी चलती रहती है....
पल पल, हर पल नया स्वप्न
ज़िन्दगी रंग बदलती रहती है

कुछ रंग आते पसंद तो कुछ नहीं
ज़िन्दगी सोचती क्या ग़लत, क्या सही
ज़िन्दगी से लड़ाई ज़िन्दगी की बस
आखिर में बस ज़िन्दगी ही तो रही
रोज़ रोज़ नई नई मशिकलों से सामना
ज़िन्दगी कैसे भी सँभलती रहती है

ज़िन्दगी कहाँ स्वकृती
ज़िन्दगी चलती रहती है....
पल पल, हर पल नया स्वप्न
ज़िन्दगी रंग बदलती रहती है....

थमी थी ज़िन्दगी कुछ पल के लिए
ज़िन्दगी देखो फिर चल पड़ी है
ज़िन्दगी बनने फिर बेहतर ज़िन्दगी
ज़िन्दगी देखो नई राह पर निकल पड़ी है
मौत फिर एक नया स्वप्न लेकर है आई
दिक्कतें बहुत ज़िन्दगी बढ़ती रहती है

ज़िन्दगी कहाँ स्वकृती
ज़िन्दगी चलती रहती है....
पल पल, हर पल नया स्वप्न
ज़िन्दगी रंग बदलती रहती है

ज़िन्दगी ने तरीके बदले, सलीके बदले
पर चाल नहीं बदली वो ही रफ़तार है
जो हार के डर से बैठे वो बस बैठे ही रहे
जो जीतने निकले ज़िन्दगी उनकी शानदार है
बदलाव में समय लगता पर होता है
ज़िन्दगी हौसलों के पंख लगा उड़ती रहती है

ज़िन्दगी कहाँ स्वकृती
ज़िन्दगी चलती रहती है....
पल पल, हर पल नया स्वप्न
ज़िन्दगी रंग बदलती रहती है

दाँव पर किसी की ज़िन्दगी, किसी के लिए
हम बस अपनी ज़िन्दगी की सोचें सही बात नहीं
ज़िन्दगी को सबकी ज़िन्दगी के बारे में सोचना होगा
ज़िन्दगी में आता सवेरा भी, रहती हमेशा रात नहीं
सर्वेदनाओं को पहचानो, ज़िन्दगी को अपना मानो
ज़िन्दगी, ज़िन्दगी के लिए लड़ती रहती है

ज़िन्दगी कहाँ स्वकृती
ज़िन्दगी चलती रहती है....
पल पल, हर पल नया स्वप्न
ज़िन्दगी रंग बदलती रहती है



फुरसत मिले तो फुरसत में सोचूँ मैं अब
क्या फुरसत जिन्दगी का फलसफा है

उन्हें फुरसत हो तो फुरसत से बात करूँ
फुरसत में जो नहीं क्यों वो हमसे खफा है

फुरसत थी तो आदत नहीं थी फुरसत की
आज फिर फुरसत हो गई हमसे बेवफा है

फुरसत के लिए सब कुछ किया हमने
सब कुछ है बस फुरसत ही रफ़ा दफ़ा है

फुरसत को फुरसत की ही फुरसत नहीं
अजब ये फुरसत की फुरसत से वफ़ा है

फुरसत थी तो फुरसत के बारे में न सोचा
शायद फुरसत का नुक़सान हमारा नफ़ा है

फुरसत जब भी मिले, फुरसत सँभाल लेना
शायद इसलिए फुरसत हमसे आज खफा है

फुरसत मिले तो फुरसत में सोचूँ मैं अब
क्या फुरसत जिन्दगी का फलसफा है

उन्हें फुरसत मिले, फुरसत से बात करूँ
फुरसत में जो नहीं क्यों वो हमसे खफा है

बहल जाऊँ मैं यूँ हीं अब वो बात कहाँ
खिलौने से खेलने की आदत नहीं रही

वो बात बात पे इलज़ाम लगाना अब कहाँ
अब मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं रही

वो रोना ज़रा ज़रा सी बात पर अब कहाँ
वो बचपन और बच्चों की रिवायत नहीं रही

चोट अब भी लगती पर वो दर्द अब कहाँ
सब सह लेता मैं आज वो नज़ाकत नहीं रही

वो बार बार स्थना और मनाना अब कहाँ
समझौते करता आज मैं वो ब़ावत नहीं रही

वो हमारे नाम से काँपते थे लोग, अब कहाँ
ज़िन्दगी की जहोरहद में शरारत नहीं रही

बहल जाऊँ मैं यूँ हीं अब वो बात कहाँ
खिलौने से खेलने की आदत नहीं रही

नफे नक्सान से अनजान बन कर सोचा जाए
इंसानियत के लिये अब इंसान बन कर सोचा जाए
ज़रूरी नहीं कि तू बना रहे मेहमान ज़िन्दगी भर
क्यों न कभी कभी यहाँ मेज़बान बन कर सोचा जाए
कभी कभी तारीफ़ भी ज़रूरी है अच्छे काम की
बुराइयाँ बहुत कर चुके, क़द्रदान बन कर सोचा जाए
बाँटने से बढ़ता है प्यार, सुख और घटता है दुख
किसी और के चेहरे की मुस्कान बन कर सोचा जाए
किया जो कछु किसी के लिए तो याद न दिलाएँ
खुदा ने दिया हो जैसे ये फ़रमान बन कर सोचा जाए
बरस जा तू कि इंसानियत की फसल पनप जाए
क्यों न अब पानी भरा आसमान बन कर सोचा जाए
उथल पथल बहुत यहाँ ज़िन्दगी में परेशान हैं सब
क्यों न अब यहाँ थोड़ा इत्मिनान बन कर सोचा जाए
नफे नक्सान से अनजान बन कर सोचा जाए
इंसानियत के लिये अब इंसान बन कर सोचा जाए
ज़रूरी नहीं कि तू बना रहे मेहमान ज़िन्दगी भर
क्यों न कभी कभी यहाँ मेज़बान बन कर सोचा जाए

जो निकलेगा अब अपने घर से
अखबार भरेगा उसकी खबर से
भले ही मौत तो घूम रही बाहर
धड़कने स्के ना तुम्हारी डर से
बंद कर लो खद को घर में तम
तोड़ो नाता अपने अपने शहर से
दूरी सबसे रखनी है बहुत ज़रूरी
लक्ष्य ओझल न हो अब नज़र से
बदले हैं नज़ारे, दिखते चाँद तारे
हट चुकी है धुंध आज चाँद पर से
शुक्रगुज़ार रहो की छत है तम्हारी
करो जी भर के प्यार अपने घर से
कानों पर यक्रीन मत कर, देख ले
अफवाहें रोज़ आएँगी इधर उधर से
सावधानी ही है सबसे बड़ा हथियार
निकाल ले खुद को तू इस मंजर से
हार जाएगा हर दुश्मन तझसे अब
दिखा आँख हौसलों के ज़िंगर से



खत लिखूँगा मैं खुद को

खुद से खुद के अहसास का पहला खत
खुद पे खुद के विश्वास का पहला खत
खुद से खुद की बात का पहला खत
खुद के साथ एकांतवास का पहला खत
पार कर जाऊँगा हर हद को.....
खत लिखूँगा मैं खुद को

कभी कभी तो मिला करो खुद से लिखना है मुझे
खुद की नज़रों में बेहतर, बेहतरीन दिखना है मुझे
करनी हैं बातें बहुत सारी जो आमने सामने नहीं हो पाती
अब तो अकेले हो मिलने आओगे की नहीं पूछना है मुझे
पार कर जाऊँगा हर सरहद को
खत लिखूँगा मैं खुद को

पढ़ूँगा जब खुद का खत खुद मैं तो भावक होना लाज़मी है
खुद से मिल नहीं पाता हूँ खुद मैं, मुझमें शायद कुछ कमी है
किया लिखना शुरू तो जैसे थमां आसमाँ और स्क गई जमी है
खुद ही हूँ दोनों तरफ मैं, पढ़ते वक्त भी, लिखते वक्त भी आँखों में नमी है
पार कर जाऊँगा हर दर्द को
खत लिखूँगा मैं खुद को

अरसा हुआ जब मैंने कोई खत किसी को लिखा था
तरक्की कर ली हमने इतनी की हर कोई सामने दिखा था
खत की बात ही अलग थी, वो इंतज़ार खत का और वो खुशबू
भीग जाता था खत खशी के आँसूओं से काग़ज में दर्द छिपा था
लिखूँगा खत खोकर सुध बुध को
खत लिखूँगा मैं खुद को

पत्थर को दर्द है पर इंसान को नहीं ?
खामोश हैं पत्थर कछ वो बोल नहीं पाते
राज दफ्न है जो सीने में खोल नहीं पाते
आज अपने पत्थर होने पर वो शर्मिंदा हैं
अफ़सोस उन्हें क्यों वो अब तक ज़िन्दा हैं
आज क्या कर रहा है इंसान उनके सहारे
जाने कितनी बार वो गये हैं बेवजह मारे
ये कैसी है हैवानियत, ये कैसा है जुनून
रोते हैं वो जब लग जाता है उन पर खून

दिशा देता जब कोई खुद को रोक नहीं पाते
खामोश हैं पत्थर कछ बोल नहीं पाते
राज दफ्न है जो सीने में खोल नहीं पाते
छू लिया था प्रभु राम ने तब वो इतराये थे
खुश थे जब पवन पत्र उठा के लाये थे
बना के भगवान उन्हें पूजता है इंसान
करता वार वो ही जब बन जाता हैवान
पत्थर के वजूद पर खतरा मँडरा रहा है
पत्थर सोच के परेशाँ क्यों उन्हें बरसा रहा है
ज़स्त होती उनकी तो खुद को छपा नहीं पाते
खामोश हैं पत्थर कछ वो बोल नहीं पाते
राज दफ्न है जो सीने में खोल नहीं पाते

पत्थर को दर्द है पर इंसान को नहीं ?
खामोश हैं पत्थर कछ वो बोल नहीं पाते
राज दफ्न है जो सीने में खोल नहीं पाते
आज अपने पत्थर होने पर वो शर्मिंदा हैं
अफ़सोस उन्हें क्यों वो अब तक ज़िन्दा हैं
आज क्या कर रहा है इंसान उनके सहारे
जाने कितने बार वो गये हैं बेवजह मारे
ये कैसी है हैवानियत, ये कैसा है जुनून
रोते हैं वो जब लग जाता है उन पर खून

पत्थर को दर्द है पर इंसान को नहीं ?
अपने स्वास्थ्य रक्षकों पर ये करना बहुत
बहुत शर्मनाक है और दुखद भी

घर वो साथ है जो कभी छूटता नहीं
घर वो भरोसा है जो कभी टूटता नहीं
समय बिताया तो पता चला हमें ये
करता बातें पर कभी कुछ पूछता नहीं
देखा हमने स्थले इंसानों, हवाओं को
वो घर ही जो हमसे कभी स्थला नहीं
हम तो टूट जाते हैं हालातों की मार से
घर ही है जो किसी मार से टूटता नहीं
आते आँधी, तूफान सह जाता सब घर
देने चोट उसे कोई यहाँ पर चूकता नहीं
हमें लेने की चाह, रखता वो देने की चाह
समंदर दरियादिली का कभी सूखता नहीं
सह लेता सब कुछ हमारे लिए हमारा घर
कैसा भी मौसम, कभी झुलसता, भीगता नहीं
कभी सोच भी न पाए थे ये सोच, सोच कर
सोचते थे बस ये कि घर कुछ सोचता नहीं
घर वो साथ है जो कभी छूटता नहीं
घर वो भरोसा है जो कभी टूटता नहीं
समय बिताया तो पता चला हमें ये
करता बातें पर कभी कुछ पूछता नहीं



बस थोड़ी देर और.....
बस थोड़ी देर और.....
काली रात ढल जाएगी
उम्मीद की रोशनी लेकर सबह आएगी
चहचहाएँगे हौसलों के पंछी आसमानों में
होगी जीत और जिन्दगी तेरी बदल जाएगी
स्वकर काटना है सफर....
चलना है कामयाबी की और....
बस थोड़ी देर और... बस थोड़ी देर और
भगदड़ है, भीड़ की, मौत के बाज़ार में
चल रही ज़हरीली हवा पूरे संसार में
सब्र से ही जीती जा सकती है ये जंग
जला उम्मीदों का दीया तू अंधियार में
कट जाएगा मशिकलों का दौर...
बस थोड़ी देर और... बस थोड़ी देर और
एकांतवास है तेरा हो जा तू जुदा
दूँठे सब तूझे पर रहना गमशदा
घड़ी है ये चुप रहकर जीतने की
इम्तिहान ले रहा है तेरा अब खदा
बस सावधानियों पर कर तू गौर
बस थोड़ी देर और.... बस थोड़ी देर और
मिला है घर आज तो घर का होकर रह
घर में है सुकूँ, घर में रहो सबसे ये ही कह
दीवारों, छत को बना ले दोस्त सुख दुख का
खिलखिलाकर हंस हो जो बात, आँखों से मत बह
गुजरते हैं सब, गुजर जाएगा ये दौर
बस थोड़ी देर और.... बस थोड़ी देर और
भूल जा सब स्वाद तू और अपने शौक
भूल जा सब रास्ते, भूल जा सब चौक
मिला है अंतराल तो मत कर क्रदमताल
जीत कर जमानी है दुनिया पर हमे धौंस
तेरी जय जय कार का होने को है शोर
बस थोड़ी देर और.... बस थोड़ी देर और

जिसकी वजह से घर में हमारे चरण हैं
उसके पीछे आज बहुत बड़ा कारण है

बंद जिसकी वजह से वो बहुत छोटा
दिखाई नहीं देता छोटा सा वो कण है

निकाल ले अपने हौसलों की तलवार
लड़ना, जीतना है, शुरू हो चुका रण है

इंसान से इंसान को खतरा हो गया है
इंसानियत ने किया मौत स्वप्न धारण है

रहना है दूर दूर हमें पास नहीं जाना है
सामाजिक दूरी का करना अनुसरण है

रखना है ख्याल गरीब का भी हमें आज
भूखा न सोए कोई करना हमें पोषण है

हरियाली सब जगह, पंछियों का शोर
हो रहा प्रकृति का भी नवीनीकरण है

बदल गई साँसें, बदले हैं दिन और रातें
बदला बदला आज हमारा आचरण है

ये वक्त सोचा न था कभी कि आएगा
घर में रहकर करना यादों का संग्रहण है

कर ले सब कछु जिसे करने की थी चाह
जी ने अपने साथ थोड़ा ये ही वो क्षण है

गुजर जाएगा बुरा दौर, जीत जाएँगे हम
लंगता है अगर तो खत्म भी होता ग्रहण है

जिसकी वजह से घर में हमारे चरण हैं
उसके पीछे आज बहुत बड़ा कारण है

बंद जिसकी वजह से वो बहुत छोटा
दिखाई नहीं देता छोटा सा वो कण है



बस थोड़ी देर और.....

बस थोड़ी देर और.....

काली रात ढल जाएगी

उम्मीद की रोशनी लेकर सबह आएगी

चहचहाएँगे हौसलों के पंछी आसमानों में

होगी जीत और जिन्दगी तेरी बदल जाएगी

रुक्कर काटना है सफर.....

चलना है कामयाबी की और.....

बस थोड़ी देर और... बस थोड़ी देर और

भगदड़ है, भीड़ की, मौत के बाज़ार में

चल रही ज़हरीली हवा पूरे संसार में

सब्र से ही जीती जा सकती है ये जंग

जला उम्मीदों का दीया तू अंधियार में

कट जाएगा मशिकलों का दौर....

बस थोड़ी देर और... बस थोड़ी देर और

एकांतवास है तेरा हो जा तू जुदा

दूँठे सब तूझे पर रहना गमशदा

घड़ी है ये चुप रहकर जीतने की

इम्तिहान ले रहा है तेरा अब खदा

बस सावधानियों पर कर तू गौर

बस थोड़ी देर और.... बस थोड़ी देर और

मिला है घर आज तो घर का होकर रह

घर में है सुकूँ, घर में रहो सबसे ये ही कह

दीवारों, छत को बना ले दोस्त सख दख का

खिलखिलाकर हंस हो जो बात, आँखों से मत बह

गुजरते हैं सब, गजर जाएगा ये दौर

बस थोड़ी देर और.... बस थोड़ी देर और

भूल जा सब स्वाद तू और अपने शौक़

भूल जा सब रास्ते, भूल जा सब चौक

मिला है अंतराल तो मत कर क़दमताल

जीत कर जमानी है दुनिया पर हमे धौंस

तेरी जय जय कार का होने को है शोर

बस थोड़ी देर और.... बस थोड़ी देर और

कुछ हुए पूरे, कुछ रह गए अधूरे
ज़िन्दगी भर मेरे अरमान बहुत रहे
मिली न वो आँखें जो देख लें हमें
दिल पे ज़ख्मों के निशान बहुत रहे

यूँ तो पता था जाना है हाथ खाली
घर रहे भरते साज़ सामान बहुत रहे
इंसानियत को मिलने को तरसते रहे
यूँ तो हमारी बस्ती में इंसान बहुत रहे

थक गया मैं निभाते निभाते सबको
मेरे लिये यहाँ पर फ़रमान बहुत रहे

भटक रहा था जो कल तक यहाँ वहाँ
घर में ज़िन्दगी के सफ़र आसान बहुत रहे
एक घर बनाने की तमन्ना थी हो गई पूरी
नाम मेरे ज़मीन, जायदाद, मकान बहुत रहे

कौन नहीं चाहता हो उसे भी फ़ायदा यहाँ
जान की खातिर दूरी का ध्यान बहुत रहे

कछ हुए पूरे, कछ रह गए अधूरे
ज़िन्दगी भर मेरे अरमान बहुत रहे
मिली न वो आँखें जो देख लें हमें
दिल पे ज़ख्मों के निशान बहुत रहे



देखें बहुत पहर ज़िन्दगी के, ऐसा पहर न देखा
शोर बहुत होता था, गूँगा अपना शहर न देखा
ईट, पत्थर, बजरी, सीमेंट मैं ही तो लाया था
मकान बना रहा था, कैसे बनता घर न देखा
बाहर हूँ फिर भी जैसे मैं फँसता चला जा रहा
हमने ऐसा खतरनाक, बड़ा, गहरा भँवर न देखा
डरता मिलाने से हाथ, गले मिलने की तो छोड़ो
दिल दहला देने वाला हमने कभी मंजर न देखा
जान बचाने वालों को तो भगवान माना जाता है
उनकी खिलाफ़त, मारने हाथों में पत्थर नहीं देखा
सब मान रहे बात, कर रहे वो ही जो वो कहते
कभी किसी की बात का इतना असर न देखा
सीख लिया वो सब कुछ जो भूल चुके थे हम
इतनी हिम्मत, हौसला और हमने सब्र न देखा
मंज़िल को सबको पाना है बाहर नहीं जाना है
थमें हैं क़दम, फिर भी चलता सफ़र नहीं देखा

बरा हो चका था बहुत मुझे अच्छा बना दिया
ज़िन्दगी ने आज फिर से मुझे बच्चा बना दिया

स्थल गया हूँ सबसे जैसे मैं आज घर में पड़ा हूँ
किसी से नहीं नाराज़ मैं आज खुद से लड़ा हूँ
बंधा हूँ ऐसे रस्सी से जैसे कि मैं खूँटा गड़ा हूँ
निकलूँगा न बाहर बस इस ज़िद पर अड़ा हूँ

पक चूका था शायद बहुत मुझे कच्चा बना दिया

बरा हो चका था बहुत मुझे अच्छा बना दिया
ज़िन्दगी ने आज फिर से मुझे बच्चा बना दिया

कैरम, लूडो, ताश, साँप सीढ़ी आज भाते मझे
भूल गया बाहर का खाना, घर का खाना खिलाते मझे
जगनूँ करते मनोरंजन मेरा, सितारे सलाते मझे
जीत जाऊँ तो कट्टी कट्टी करते सब चिढ़ाते मुझे

खेल खेल में करता बेर्डमानी मुझे लुच्चा बना दिया

बरा हो चका था बहुत मुझे अच्छा बना दिया
ज़िन्दगी ने आज फिर से मुझे बच्चा बना दिया

झूठ, झूठ बस झूठ का एक पलिंदा था मैं
अपने झूठ पर अपनों के आगे शर्मिदा था मैं
समय नहीं है समय, ये कहकर ज़िन्दा था मैं
कहने को आज़ाद, पिंजरे में बंद परिदा था मैं

झूठ की नहीं कोई वजह मुझे सच्चा बना दिया

बरा हो चका था बहुत मुझे अच्छा बना दिया
ज़िन्दगी ने आज फिर से मुझे बच्चा बना दिया

कुछ यादें थी कुछ यादें बना रहा हूँ मैं आज
बदल गए हैं कुछ सलीके, बदले हैं रिवाज
जानता हूँ सामाजिक दूरी है इसका इलाज
इतरा रहा घर पर देखो तो ज़रा मेरा अंदाज

अंगूर सी हैं यादें, मुझे यादों का गुच्छा बना दिया

बरा हो चका था बहुत मुझे अच्छा बना दिया
ज़िन्दगी ने आज फिर से मुझे बच्चा बना दिया



सहमा सहमा, फ़िज़ा है बदली मेरे शहर में
कैसा अदृश्य दुश्मन आ गया है मेरे शहर में
कैसी होड़ लगी है घर से बाहर निकलने की
जानते नहीं चल रही ज़हरीली हवा मेरे शहर में
तंग गलियाँ, गन्दगी, सड़कें, खत्म हरियाली
तभी इन्सानों को मिल रही सज्जा मेरे शहर में
जान बचाने वालों की जान के दुश्मन हो गए
शैतान हाथों में पत्थर लिए ढूँढ़ता मेरे शहर में
मँह नक्राब चढ़ा, इंसान पहचानना मशिकल
इंसान से आज इंसान है, बचता मेरे शहर में
जान के दुश्मन वो अपनी और हमारी हो गए
कोई है यहाँ जो साज़िश रचता मेरे शहर में
जाने कितने बवंडर लेकर आयेंगी ये हवाएँ
क्यों नहीं आज ये तूफ़ान थमता मेरे शहर में
साँसें मोहताज हो गई, साँसों की आज देखो
मैं खुद आज घर से नहीं निकलता मेरे शहर में

बाहर मत आओ, घरों में रहो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....
सो जाओ, दिन को रात करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

कर लो समन्दर को पार करने की तैयारी
पानी बढ़ने का न इंतज़ार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

ये लड़ाई है उजालों की अंधेरों के साथ
जला के दीये फ़िज़ा सरोबार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

छोड़ दो गले मिलना, आफ़त गले पड़ जाएगी
तम दूरियों से अब कारोबार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

संयम, हौसला, विश्वास रखने की ज़रूरत है
कछ तो घर पर अपने एतबार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

मारते हो पत्थर उन पर जो जान बचा रहे हैं
इंसानियत को न तम शर्मसार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

छप कर रहने में ही है भलाई अब मौत से
घर को अपने ठहाकों से गुलज़ार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

झुकाओ सजदे में सिर अपना उनके सामने
उन सब से शक्रिया का इज़हार करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....

बाहर मत आओ, घरों में रहो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....
सो जाओ, दिन को रात करो
कि तुम ख़तरे मैं हो.....



क्या क्या हुई हैं हमसे ग़लतियाँ सब आज याद आ रही हैं
दूर हो गए हैं हम इतने कि नज़दीकियाँ याद आ रही हैं
रोए तो रोए किसके सामने जाकर हम, सब एक जैसे
छुप छुप कर रोना और वो सिसकियाँ याद आ रही हैं
मज़े लिए बहुत, खेले कूदे, सोचा न था ये भी हो जाएगा
वो माथे पर पसीने की लकीरें, संजीदगियाँ याद आ रही हैं
वो बचपन, वो मैदान, हौसलों की पतंग, खुला आसमान
घर में बंद हैं जब सब तो वो मस्तियाँ याद आ रही हैं
करता है मन कि कहीं भाग जाऊँ पर नहीं बंधा हूँ मैं आज
भाग भाग कर पकड़ना चाहता तितलियाँ याद आ रही हैं
अंधेरों का शहर हो गया शहर मेरा, उजालों की खोज जारी है
दीयों की लड़ियाँ, रॉकेट, अनार, फुलझड़ियाँ याद आ रही हैं
यहीं का था मैं, यहीं का होकर रह गया, होना ही था एक दिन
वो सड़क, वो चौक, वो दुकान, वो गलियाँ याद आ रही हैं
क्या क्या हुई हैं हमसे ग़लतियाँ सब आज याद आ रही हैं
दूर हो गए हैं हम इतने कि नज़दीकियाँ याद आ रही हैं

गमशदा हो गया मैं तो अपने शहर से आज
किसी ने नहीं लिखाई गुमशुदगी की रपट है
खींच दी है लक्ष्मण रेखा घर के बाहर मैंने
बाहर निकलने में आज यहाँ बहुत झँझट है
आहिस्ता, आहिस्ता चल रही ज़िन्दगी आज
खत्म हो चुकी आज सब यहाँ फटाफट है
चाँद, सितारों की नमाइश लगती है रात में
रातों में हिन्दुस्तान की छतों पर जमघट है
सबह सुबह पंछियों की चहचहाहट से उठता
दिखती नई प्रकृति हट चुका धुएँ का धूधट है
काम धाम कुछ नहीं तो आराम ही आराम है
बस हो रही दरवाज़ों, अलमारी से खटखट है
मैं हूँ और मेरे ज़ज़बात, तन्हाईयों के साथ साथ
मोबाइल मेरे पास, देखने को कुछ चित्रपट है
हरा दूँगा मैं अदृश्य दुश्मन को रहकर दूर दूर
जीतना है मुझे हर हाल में ले ली ये शपथ है
गमशदा हो गया मैं तो अपने शहर से आज
किसी ने नहीं लिखाई गुमशुदगी की रपट है
खींच दी है लक्ष्मण रेखा घर के बाहर मैंने
बाहर निकलने में आज यहाँ बहुत झँझट है



जाने कब आएगी वो आज़ादी का पैशाम लेकर
ज़िन्दगी देती दस्तक रोज़ नया तूफान लेकर
जो होना होगा वो ही होगा बस में नहीं कुछ
क्या कर लोगे तुम इतना साज़ सामान लेकर
सब ख़रीद सकता था, समय और नींद नहीं
फिर एक बार बैठा हूँ मैं घर का अहसान लेकर
सबूत माँगते हैं सब इंसानियत का आज मझसे
जाने क्या मिल जाएगा उन्हें मेरी पहचान लेकर
सासों का टकराव है और ज़िन्दगी में ठहराव है
घर में अपने घूम रहा मैं उसका फ़रमान लेकर
आज़ादी की फ़िराक में है हर कोई लाज़मी है
हमारे दिन गुजर रहे हैं हर पल मुस्कान लेकर
ज़िन्दगी की शाम कब, कहाँ होगी क्या पता
मत घूमो बेखबर तुम मौत का संज्ञान लेकर
जाने कब आएगी वो आज़ादी का पैशाम लेकर
ज़िन्दगी देती दस्तक रोज़ नया तूफान लेकर
जो होना होगा वो ही होगा बस में नहीं कुछ
क्या कर लोगे तुम इतना साज़ों सामान लेकर



दुश्मन छपा है, छप छप के कर रहा है बार
जीतना है हर हाल में, हमें माननी नहीं हार

कम हों मलाक्रातें और दूर से ही हों बातें
हाथ मिलाने की आदत छोड़, करो नमस्कार

हाथों को बार बार धोना है, सावधान रहना है
समझदारी से कर दो बंद, दुश्मन के सब द्वार

चलेगा ना कोई अब तर्क, रहना है हमें सतर्क
बचाना है देश हमें, दोस्त बचाने और परिवार

रखना है बस अपना ख्याल, सब का होगा भला
हमें सुरक्षित रखने के लिए, कर रही सब सरकार

न हो कोई कश्मकशा, अलग रहे बीमार शख्स
टूटेगी कड़ी तभी, दुश्मन न पाएगा पैर अपने पसार

दुश्मन छपा है, छप छप के कर रहा है बार
जीतना है हर हाल में हमें, माननी नहीं हार

कम हों मलाक्रातें और दूर से ही हों बातें
हाथ मिलाने की आदत छोड़, करो नमस्कार

सोचें, समझें और सतर्क और सजग रहें, सुरक्षित रहें।



मार्च “ जनता कफ्र्यू ” वाले दिन मैं क्या करूँगा

भूल चूका हूँ जिसे, उस गुजरे बचपन को बुलाऊँगा
बन जाऊँगा मैं बच्चों में बच्चा, बच्चों वाला इतवार मनाऊँगा

चला जाऊँगा मैं मोगली के साथ, जंगल में धूमने के लिए
महाभारत के समय के पहिए को, मैं ज़ोर ज़ोर से धुमाऊँगा

खट्टा मीठा था वो हर्सी सफ़र, “ ये जो है ज़िन्दगी का ”

खिली खिली सुबह सुरभि के साथ, मैं चित्रहार का मज़ा उठाऊँगा

भागूँगा नीम के पेड़ के इर्द गिर्द, मैं विक्रम बेताल के साथ साथ
क्रूर सिंह की क्रूरता से मैं, उस दिन चन्द्रकान्ता को बचाऊँगा

होती थी जब बातें नुककड़ पर ज़ुबान सँभाल के बचपन में
स्टार ट्रैक की ऊँची उड़ान में मैं सब बच्चों को उड़ाऊँगा

पिंकी, चम्पक, राजन इक्कबाल और नन्दन की वो अजब श़ज़ब दुनिया
बच्चों को साबू की ताक़त और चाचा चौधरी का दिमाग दिखाऊँगा

सनूँगा वो मधर धन ठमक ठमक चलत राम चन्द्र जी वाली
छीन कर दाने अनार के मैं मुस्सद्दी से अपनी नज़रें चुराऊँगा

ताश के सारे पत्ते लेने की चाह, वो बचपन जो था बेपरवाह
लूँगा सीढ़ी चढ़ने का सुख और खुद को साँप से मैं बचाऊँगा

बच्चे आज के अनजान हैं मेरे बचपन और बचपन की दुनिया से
अपने बच्चों की मुलाकात मैं अपने बचपन से करवाऊँगा

हरा दूँगा कोरोना को, रह कर मैं घर पर जीत कर दिखाऊँगा
नहीं है मजबूरी, सामाजिक दूरी, मैं अपना वादा ज़रूर निभाऊँगा

आप सब भी योजना बना लें और “ जनता कफ्र्यू ” को सफल बनाएँ।





supported by:

 EURO PRATIK ISPAT (INDIA) PVT. LTD.		 TRIMULA INDUSTRIES LTD.
 Vimla Fuels	 B. S. SPRING-O-TECH	 KAILASH GROUP

with best compliments:

 PRAKRITI Care & Convenience	 evera Be The Difference	 Moonwalk N+R PROJECTS
 VYOMPOWER PRIVATE LIMITED	 NISARG ISPAT PVT. LTD.	 Minsource International



Vikas Bansal

1939, Sector-28, Opp. Shiv Shakti Mandir, Faridabad - 121008 (Haryana)
Mobile: 98735 55289, 98109 55586, E-mail: micky.bansal75@gmail.com
Twitter: @VikasbansalEF